तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

नवम्बर-2019 रु.5/-

तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव

२३-११-२०१९ से
०१-१२-२०१९ तक

क्षीरसागर कन्या तू, पद्मासनी हो !
क्षीरसागर पर लेटे श्रीवेंकटपति की देवी है तू !!

- अन्नमय्या

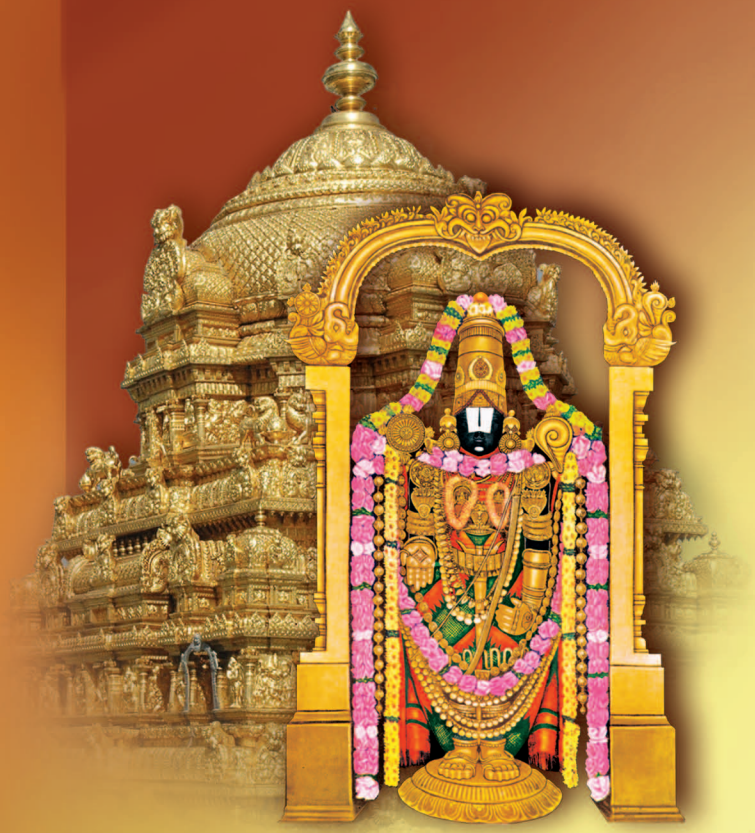

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की

नूतन न्यासमंडली

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की नूतन न्यासमंडली को आंध्रप्रदेश राज्य सरकार ने नियुक्त किया। अध्यक्ष, सदस्य, पदेन सदस्य, विशेष आमंत्रितों से तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकरी, अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकरी, संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकरी, उच्चपदाधिकारियों ने शपथ करवाई। इन्हें श्रीपति के तीर्थप्रसाद दिया गया। वेदपंडितों ने आशीर्वचन दिया।

श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी
न्यासमंडली के अध्यक्ष

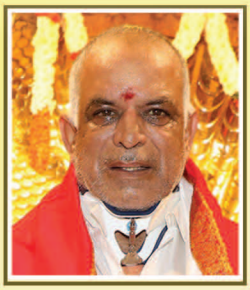

श्री यू.वी.रमणमूर्ति राजु
सदस्य

श्री एम.वेंकट मल्लिकार्जुन रेड्डी
सदस्य

श्री के.पार्थसारथी
सदस्य

श्री पी.मुरलीकुष्ण
सदस्य

श्री कृष्णमूर्ति वैथ्यनाथन्
सदस्य

श्री नारायणस्वामी श्रीनिवासन्
सदस्य

श्री जे.रामेश्वर राव
सदस्य

श्रीमती वी.प्रशांति
सदस्य

डॉ.बी.पार्थसारथी रेड्डी
सदस्य

डॉ.निचिता मुप्पवरपु
सदस्य

श्री नादेल्ल सुब्बाराव
सदस्य

श्री डी.पी.अनंत
सदस्य

श्री राजेश शर्मा
सदस्य

श्री रमेश शेट्टी
सदस्य

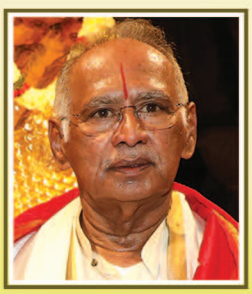

श्री जी.वी.भास्कर राव
सदस्य

श्री एम.रामुलु
सदस्य

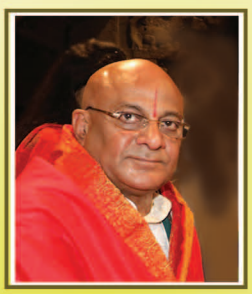

श्री डी.दामोदर राव
सदस्य

कुछ अन्य बोर्ड सदस्यों का विवरण पृष्ठ ५५ में है –

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-४)

इस सेना में बडे-बडे धनुषोंवाले तथा युद्ध में भीम, अर्जुन के समान शूरवीर सात्यकि और विराट तथा महारथी राजा द्रुपद हैं।

गंगा गीता तथा भिक्षुः कपिलाश्वत्थ सेवनम्।
वासरं पद्मनाभस्य पावनं किं कलौयुगे।।

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

कलियुग में गंगा नदी, गीता, भिक्षु, कपिल गाय, पीपल के पेड आदि भगवान विष्णु के पर्वदिन (एकादशी आदि) से बढकर पावन वस्तु क्या हैं?

तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२३-११-२०१९ से ०१-१२-२०१९ तक

२३-११-२०१९
शनिवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - लघुशेषवाहन

२४-११-२०१९
रविवार
दिन - महाशेषवाहन
रात - हंसवाहन

२५-११-२०१९
सोमवार
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - सिंहवाहन

२६-११-२०१९
मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमंतवाहन

२७-११-२०१९
बुधवार
दिन - पालकी उत्सव
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

२८-११-२०१९
गुरुवार
दिन - सर्वभूपालवाहन,
स्वर्ण रथोत्सव
रात - गरुडवाहन

२९-११-२०१९
शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

३०-११-२०१९
शनिवार
दिन - रथोत्सव
रात - अश्ववाहन

०१-१२-२०१९
रविवार
दिन - चक्रस्नान,
पंचमीतीर्थ
रात - ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं
ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन,
वेङ्कटेश समो देवो
न भूतो न भविष्यति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
सचित्र मासिक पत्रिका

वर्ष-५० नवम्बर-२०१९ अंक-०६

विषयसूची

श्री सेनै-मुदलियार	श्रीमती शकुंतला उपाध्याय	07
श्री पोय्गै आळ्वार	श्री यतिराज झंवर	08
श्री पिळ्ळै लोकाचार्य	श्री भवरी रघुराथ रांदड	10
श्री भूतत आल्वार (श्री भूतयोगी स्वामीजी)	श्रीमती नीता गोकुलजी दरक	12
श्री नडुविल् तिरुवीदिप् पिळ्ळै भट्टर्	श्री गोविंद मधुसूदन रांदड़	14
एरुम्बी अप्पा	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	17
श्री कूर कुलोत्तम दासर्	श्री चन्द्रकान्त घनश्यामदास लाहोटी	19
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	21
भागवत कथा सागर महाराजा प्रियव्रत	श्री अमोग गौराँग दास	23
संसार के वैद्य भगवान धन्वंतरि	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	25
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	31
मन नियंत्रण मार्ग	श्री अमोघ गौराँग दास	32
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	34
बालाजी श्रीवेंकटेश भगवान की सेवा में महन्त	डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु	35
दिव्यक्षेत्र तिरुमल	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	39
तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव	डॉ.बी.के.माधवी	43
इतिहास में 'तिरुचानूर' क्षेत्र	डॉ.एम.रजनी	49
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	51

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस्.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, बी.ए., बी.एड्.,
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

श्री पी.शिवप्रसाद,
सेवानिवृत्त चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

मुखचित्र
श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।

चौथा कवर पृष्ठ
पंचमीतीर्थ, तिरुचानूर।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त किये विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं। *– प्रधान संपादक*

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, 2264360.

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org
वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशियों को वार्षिक चंदा .. रु.850-00

संपादकीय

मोद में अलमेलुमंगा जब अवतरित हुई...!

सुंदरतम भूलोक में अलमेलुमंगा के आविर्भाव की गाथा अद्भुत गाथा है। सहस्र दल सुवर्ण पद्म में ''पद्मावती देवी'' का आविर्भाव अति आश्चर्यजनक घटना है। अत्यंत आनंद प्रदान करनेवाले उस संदर्भ को जानने से पहले श्री वेंकटेश्वरस्वामी 'श्रीनिवास' कैसे और क्यों बने! यह जानना आवश्यक होता है क्योंकि इसका संबंध मैया के अवतरण से जुडा हुआ है। इतना ही नहीं, इस दंपति के अवतरण की दिव्य गाथा का कारण माने 'लोककल्याण', की बात का भी विवरण मिलता है।

'कलौ वेंकटनायकः' जैसी प्रशस्ति से भूलोक वैकुण्ठ तिरुमल में पधारे वेंकटेश्वर को लगा कि श्री महालक्ष्मी के बिना वे अकेले भक्तों का मनोभीष्ट संपूर्णतया कर सकते। वे कोल्हापुर महालक्ष्मी के पास गये। उन्होंने वहाँ दस साल तक माँ के दर्शन केलिए तपस्या की। इतने में अशरीरवाणी के आदेशानुसार वे सुवर्णमुखरी नदी के तट पर पद्मसरोवर का प्रतिष्ठापन किया। वहाँ १२ साल महालक्ष्मी के लिए तपस्या की।

(सौरमान के अनुसार) कार्तिक मास के शुद्ध पंचमी शुक्रवार को अभिजित लग्न में, श्री महालक्ष्मी पद्मसरोवर के दिव्य जल में दिव्य कांति पुंज की भांति सहस्रदल वाले स्वर्ण पद्म में अवतरित हुई। अतुलित प्रकाश से सुसज्जित स्वर्ण पद्म में आनंद पूर्वक श्री महालक्ष्मी उद्भूत हुई। ब्रह्मादिदेवताओं ने उन्हें 'पद्मावती देवी' कहा। पद्म पर आविर्भूत उस दिव्य कांति पुंज को कुछ लोगों ने ''अलर् मेल् मंगा'' कहकर स्तुति की। लोककल्याण केलिए की सोच में निमग्न आनंदनिलय स्वामी के पास तुरंत पहुँच गयी अलिमेलुमंगा। अपने गले के कमल के फूलों की माला को निकालकर श्री वेंकटेश्वर के गले में अलंकृत किया। स्वामीजी ने तब देवीजी का आलिंगन किया। तथा अपने हृदय में ''व्यूहलक्ष्मी'' के रूप में स्थापित कर तिरुमल को निकले। लेकिन, ब्रह्मादिदेवताओं की प्रार्थना के कारण, माँ जिस पद्मसरोवर में अवतरित होकर अलमेलुमंगा, पद्मावती देवी जैसे नामों से सुकीर्तित हैं, वही माँ श्रीनिवास के बिना स्वतंत्र्य ''वीरलक्ष्मी'' के नाम से पूजा स्वीकारती हैं। ब्रह्मादिदेवताओं से आयोजित ''देवी माँ'' के ब्रह्मोत्सव आज भी वैभव पूर्वक चालू हो रही हैं। मुख्य रूप से इन उत्सवों के आखिर दिन यानी 'पंचमीतीर्थ' के दिन श्रीपति की ओर से भेंट के रूप में चोली सहित साडी, हल्दी-कुंकुम, कीमती आभूषण, विविध प्रकार के पकवान आदि को भेंट के रूप में हाथी के ऊपर रखकर शोभायात्रा निकाल कर देवी माँ को भेजना एक संप्रदाय बना और वह आज भी चालू है।

अलमेलुमंगा मैया साक्षात् आनंदनिलय भगवान का दया स्वरूपिणी है। वह माँ सभी जगहों में सर्वकाल सर्वावस्था में भक्तों को आश्रय देती है। भक्तों के लिए वह माता श्री वेंकटेश्वर का आश्रय लेती है। वह माँ सबसे पहले भक्तों का मनोभीष्ट जानती है, फिर श्री वेंकटेश्वर को भी सुनाकर वर प्रदान करने वाली के लिए बाध्य करती है। माँ 'वरप्रदायिनी'। वात्सल्य से भक्तों के दोष दूर करती है। कभी-कभार कुछ दोषों को विशिष्ट गुणों के रूप में दिखाकर स्वामीजी के गुस्से को कम करती है। आनंदनिलय स्वामीजी के वक्षःस्थल में ''व्यूहलक्ष्मी'' के रूप में, तिरुचानूर में ''पद्मावती देवी'' या ''अलमेलुमंगा'' जैसे नामों को अर्चामूर्ति बनकर स्वयं प्रकाशित होकर, सर्वलोकों को प्रकाशित करनेवाली दयामयी माँ भगवती श्री पद्मावती देवी भक्त वत्सल प्रिय है।

इतनी महिमान्वित विशिष्ट गुणों से सुसज्जित, संपन्न माँ अलमेलुमंगा ''पंचमीतीर्थ'' के दिन अवतरित हुई। उससे दस दिन पहले से ही हर दिन महासाम्राज्ञी बनकर शेषवाहन पर अनंतलक्ष्मी, हंस पर सरस्वती, कल्पवृक्ष में कामितार्थ प्रदायिनी के रूप में, गजवाहन पर गजलक्ष्मी की भांति, गरुडवाहन पर श्री वेंकटाद्रिलक्ष्मी के रूप में, हनुमंतवाहन पर सीतालक्ष्मी के रूप में... विविध वाहनों में भक्तों को दर्शन प्रदान कर, आनंदनिलय स्वामी की पट्टरानी अलमेलुमंगा अवतरित उस आनंद भरे उत्सव में भागलेने, नयनानंद प्राप्त करने, करों से नमस्कार करने, मुक्तकंठ से स्तुति करने आध्यात्मिक, अलौकिक सौंदर्य का आस्वादन करने केलिए सभी लोगों को हमारी (आपकी) ''सप्तगिरि'' पत्रिका हार्दिक स्वागत देती है।

ओम् श्रियै नमः

श्री सेनै-मुदलियार

(विष्वक्सेनजी)

- श्रीमती शकुंतला उपाध्याय
मोबाइल - ९०३६८८१०८६

तिरुनक्षत्र - अश्विन मास, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र

ग्रन्थ सूची - विष्वक्सेनजी संहिता

श्री विष्वक्सेनजी नित्य सूरि है। भगवान के प्रधान सेनापति है, भगवान कि आज्ञा से नित्य विभूति और लीला विभूति पर अपना नियंत्रण रखते है। वे कई नामों से जाने जाते है जैसे - सेनै मुदलियार, सेनाधिपति, वेत्रधर, वेत्रहस्तर इत्यादि। उनकी पत्नी का नाम सूत्रवति है। वे शेष-आसनर के नाम से भी जाने जाते है क्योंकि वे ऐसे पहले नित्य सूरी है जिन्हे भगवान का शेषप्रसाद सर्वप्रथम इन्हे ही निवेदित किया जाता है।

हमारे पूर्वाचार्यों के अनुसार पेरिय पिराट्टि विष्वक्सेनजी की आचार्य है और आळवार संत भी इनके शिष्य हुए है। बतलाते है की भगवान नित्य-लीला विभूति के कार्यों का नियंत्रण श्री विष्वक्सेनजी को दे रखा है और भगवान अपने स्वधाम में भक्तगणों और नित्यसूरियों के कैंकर्य का आनन्द लेते है। पूर्वाचार्यों के अनुसार श्री विष्वक्सेनजी एक मन्त्री का अभिनय करते है और श्री भगवान एक राजकुमार का अभिनय करते है।

श्री यामुनाचार्य ने अपने स्तोत्ररत्न (४२वें श्लोक) में भगवान और विष्वक्सेनजी के सम्बन्ध को कुछ इस प्रकार दर्शाया है।

त्वदीय भुक्तोज्झित शेष भोजिना त्वया निसृष्टात्मभरेण यद्यथा।
प्रियेण सेनापतिना न्यवेदि तत् तथाऽनुजानन्तमुदारवीक्षणैः।।

इस श्लोक में श्री यामुनाचार्य भगवान को सम्बोधित करते हुये, श्री विष्वक्सेनजी कि प्रशंसा करते है और भगवान के उभय साम्राज्य जो श्री विष्वक्सेनजी के नियंत्रण में है उसी दृश्य का आनन्द लेते है।

भावार्थ (संक्षिप्त)- इस श्लोक में श्री यामुनाचार्य स्वामीजी कहते है कि विष्वक्सेनजी पेरुमाल् भगवान की आज्ञा से उनके उभय साम्राज्य के नियंत्रक है और जो भगवानजी का शेष प्रसाद सबसे पहले प्राप्त करते है, और उभय विभूतियों - नित्य सूरी और लीला विभूति दोनों के ही प्रिय है। श्री विष्वक्सेनजी भगवान के कार्यों को (भगवान के कटाक्ष मात्र से) समझकर भलि-भाँति निभाते है। श्री विष्वक्सेनजी भगवान के आँखों से समझ जाते है की उनकी क्या इच्छा है और वे अपने निपुणता से उस कार्य को निभाते है।

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. ०२.११.२०१९

श्री विष्वक्सेनजी का तनियन

श्री रंगचँद्रमसम् इन्द्रियाविहर्तुम्
विन्यस्यविस्वचिद चिन्नयनाधिकारम्।
यो निर्वहत्य निसमन्गुळि मुद्रयैव
सेनान्यमन्य विमुकास्तमसि श्रियाम्।।

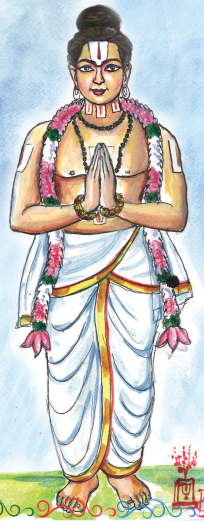

श्री पोय्गै आळ्वार

(श्री सरोयोगि आळ्वार)

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. ०४.११.२०१९

- श्री यतिराज झंवर
मोबाइल - ७५८८८७६४३३

श्रीवैष्णव परम्परा में भगवान श्रीमन्नारायण का मंगलाशासन करने के लिए और वैभव बडाने के लिए सर्वप्रथम भगवान के नित्यसूरियों ने आल्वारों के रूप में अवतार लिया। भगवान के प्रेम में डूबकर भगवान का मंगलाशासन करने के लिए आल्वारों ने दिव्यप्रबंधों की रचना की।

ऐसे महान इन आल्वारों में श्री सरोयोगि स्वामीजी इस भूतल पर अवतरित हुये सर्वप्रथम अल्वार हैं। श्री सरोयोगि स्वामीजी से ही श्रीवैष्णव परंपरा इस भूतल पर प्रारम्भ हुयी है। श्री सरोयोगि स्वामीजी के एक दिन पश्चात् श्री भूतयोगी स्वामीजी का अवतार हुआ और दो दिन पश्चात् श्री महाद्योगी स्वामीजी का अवतार हुआ। ये तीन आल्वार एकत्रित रूप में मुनित्रय (मुदल आल्वार) नाम से जाने जाते हैं। श्रीवैष्णवता की नींव इन मुनित्रयों ने ही रखी है। इन मुनित्रयों में हम प्रथमतः श्री सरोयोगि स्वामीजी का चरित्र अनुभव करेंगे।

अवतार

काञ्चयाम् सरसि हेमाब्जे जातम् कासारयोगिनम्।
कलये यः श्रियः पति रविम् दीपम् अकल्पयत्।।

सात मोक्षदायिनी पुरियों में सर्वश्रेष्ठ श्री कांचीपुरी हैं जहाँ भगवान के १८ दिव्यदेश प्रसिद्ध हैं। उन १८ दिव्यदेशों में एक अष्टभुज दिव्यदेश है और उसके उत्तर में तिरुवेखा श्री यथोक्तकारी भगवान का दिव्यदेश है। उस मन्दिर के उत्तर में स्वर्णकमलों से आवृत एक सरोवर है। द्वापर युग की समाप्ति और कलि-युग के प्रारंभ में (युग संधि - संक्रमण काल में) यहाँ पर द्वापरयुग के ७,६०,९०० सम्वत्सर व्यतीत हो जाने पर सिद्धार्थी सम्वत्सर के तुला (अश्विन) मास श्रवणा नक्षत्र में स्वर्णकमल में श्री सरोयोगि स्वामीजी ने अवतार लिया। वें भगवान के पांचजन्य शंख के अवतार हैं। इनका अवतार माता के कोख से न होकर पुष्पगर्भ से हुआ इसलिये ये अयोनिज माने गये हैं।

श्री सरोयोगि स्वामीजी का प्रारम्भ काल और वैभव

१) श्री सरोयोगि स्वामीजी स्वतःसिद्ध, परमात्मा दासरुपी, मुख्य रस के रसिक, भगवद्भक्ति तथा ज्ञान वैराग्य से सदा सम्पन्न थे।

२) वें बचपन से अन्न-पानादि से रहित और शब्दादि विषयों से सदैव अपरिचित रहे।

३) श्री विश्वक्सेनजी श्री सरोयोगि स्वामीजी के आचार्य हुये।

४) भगवान श्री लक्ष्मीकान्त ने भूतलपर पधारकर श्री सरोयोगि स्वामीजी को तत्त्वार्थ ज्ञान से सम्पन्न करके समुचित उपदेश दिया।

५) श्री सरोयोगि ने भगवान के लिये कमल समर्पित किया और मूलमन्त्र जपते जपते अपनी सुधि भूल गये।

६) इन्हें जन्म से ही भगवान के प्रति अत्यंत प्रीति थी।

७) भगवान का परिपूर्ण अनुग्रह उन्हें प्राप्त था और उन्होंने जीवन पर्यंत भगवत अनुभव का आनन्द प्राप्त किया।

८) श्री सरोयोगि स्वामीजी मोक्षप्रद हैं।

९) उनमें सात्विक गुणों की अधिकता है।

१०) वें संसार रूपी अग्नि के नाशक है।

११) वें शीतल सरोवर से प्रादुर्भूत है तथा सुन्दर वचन बोलनेवाले हैं इसलिये वें सरोयोगि कहलाते हैं।

१२) श्री सरोयोगि स्वामीजी, श्री कासारयोगि, श्री सरोमुनींद्र, श्री पोय्गै आळवार इन नामों से भी जाने जाते हैं।

मुनित्रय (मुदल आल्वार) मिलन

एक समय भगवान की विशेष कृपा से उनकी तिरुक्कोवलूर दिव्यदेश में श्री भूतयोगी स्वामीजी और श्री महाद्योगी स्वामीजी से एक अंधेरी कुटिया में भेंट हुई। उस अंधेरी कुटिया में साक्षात् भगवान इन तीनों आल्वारों को दर्शन देने पधारें। उस समय सरोयोगि आळवार ने भगवान का दर्शन करने के लिए संसार रूपी दीपक, समुद्र रूपी तेल और सूरज रूपी रोशनी से दीप प्रज्वलित किया। उस समय से वे तीनों आळवार तिरुक्कोवलूर आयन और अन्य अर्चावतार भगवान के स्वरूपों का साथ-साथ अनुभव करते हुए इस लीला विभूति में अपना जीवन बिताये। उन्होंने साथ मिलकर और भी कई दिव्यदेशों/क्षेत्रों के दर्शन किये। इन्हें **''ओडि तिरियुम योगिगळ''** अर्थात् निरन्तर तीर्थ यात्रा में रहने वाले योगी भी कहा जाता हैं।

आचार्य आळ्वारों द्वारा श्री सरोयोगि स्वामीजी का वैभव प्रकाशन -

१) श्री शठकोप स्वामीजी कहते हैं, ''भगवान की महानता/प्रभुत्वता को प्रथम बार सुमधुर तमिल भाषा में इन्होंने ही प्रकाशित किया हैं।''

२) श्री कलिवैरिदास स्वामीजी, इन्हें, **''सेन्तमिळ पाडुवार''** मधुर तमिल भाषा में गाने वाले और **''इन्कवि पाडुम परमकविगळ''** - तमिल भाषा के महान पंडित कहकर संबोधित करते हैं।

३) श्री कलिवैरिदास स्वामीजी यह भी कहते हैं की वे **अनन्य प्रयोजनर्गळ** अर्थात् बिना लाभ अपेक्षा के एम्पेरुमान् (भगवान) के गुण गाते हैं।

४) श्री वरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्नमाला में बताते हैं की इन्होंने अपने दिव्य तमिल पाशुरों से इस जगत को प्रकाशित किया।

५) पिळ्ळै लोकम् जीयर् बताते है की श्रीवैष्णव संप्रदाय में मुदल आल्वारों को उसी प्रकार माना जाता है जिस प्रकार **प्रणव (ॐकार)** को आरंभ के रूप में माना जाता है।

६) श्री वरवरमुनि स्वामीजी बताते है की अश्विन मास की महत्ता और वैभव श्री सरोयोगि स्वामीजी के अवतार के कारण ही है।

७) पेरियवाच्चन् पिल्लै के तिरुनेडुताण्डगम् व्याख्यान के अवतारिका (भूमिका खंड) में बताया है कि मुदल आळवार, भगवान की परतत्त्वता/प्रभुत्वता पर अधिक केन्द्रित थे। इसी कारण, प्रायः वे भगवान के त्रिविक्रम अवतार की स्तुति किया करते थे।

ग्रंथ रचना

श्री सरोयोगि स्वामीजी ने सौ गाथाओं से युक्त मुदल तिरुवन्दादि द्राविडप्रबन्ध की रचना की। श्री सरोयोगि स्वामीजी ने श्रीरंगम्, श्रीवेंकटाद्रि, श्रीकांची, श्रीदेहली आदि दिव्यदेशों का वर्णन किया है।

श्री पिळ्ळै लोकाचार्य

- श्री भवरी रघुनाथ रांदड
मोबाइल - ९९००९२६७७३

तिरुनक्षत्र - तुला मास, श्रावण नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीरंग

आचार्य - श्रीकृष्णपाद स्वामीजी

शिष्यगण - कूर कुलोत्तम दास, विळान चोलै पिळ्ळै, तिरुवायमोळि पिळ्ळै मणप्पाक्कतु नम्बि, कोट्टुरण्णर, तिरुप्पुट्कुळि जीयर, तिरुकण्णन्गुडि पिळ्ळै, कोल्लि कावलदास इत्यादि

परमपद प्राप्त स्थल - ज्योतिष्कुडि (मधुरै के पास)

ग्रंथरचनासूचि - याद्रिचिक पडि, मुमुक्षुप्पडि, श्रियःपति, परंत पडि, तनि प्रणवम्, तनि द्वयम्, तनि चरमम्, अर्थ पंचकम्, तत्वत्रयम, तत्वशेखरम्, सारसंग्रहम्, अर्चिरादि, प्रमेयशेखरम्, संसारसाम्राज्यम्, प्रपन्नपरित्राणम्, नवरत्तिनमालै, नवविधासंबंधम्, श्रीवचनभूषणम् इत्यादि।

श्रीरंग में श्री पिळ्ळै लोकाचार्य नम्पिळ्ळै के विशेष अनुग्रह से श्रीकृष्णपाद स्वामीजी को पुत्र के रूप में प्रकट हुए। जिस प्रकार अयोध्या में श्रीराम भगवान और लक्ष्मण, गोकुल में श्रीकृष्ण भगवान और बलराम बडे हुए उसी प्रकार पिळ्ळै लोकाचार्य और उनके छोटे भाई अळगिय मणवाळ नायनार श्रीरंग में बडे हुए। दोनों भाई हमारे सत्सांप्रदाय के कई आचार्य- नम्पिळ्ळै, पेरियवाच्चानपिळ्ळै, वडुक्कु तिरुवीधिपिळ्ळै इत्यादि के विशेष अनुग्रह के पात्र हुए। उन्होंने अपने पिता के चरण कमलों का आश्रय लेकर सत्सांप्रदाय के बारें में सीखा। इन दोनों भाईयों ने उनके जीवन काल में नैष्टिक ब्रह्मचर्य पालन करने का शपथ लिया और यह उन दोनों आचार्यसिंहों का विशेष गुण था।

इस भौतिक जगत में शोषित जिवात्माओं के प्रति अत्यन्त कारुण्य भावना रखते हुए श्री पिळ्ळै लोकाचार्य ने भगवान श्रीमन्नारायण की असीम कृपा से कई सारे ग्रंथों की रचना किये जो केवल हमारे सत्सांप्रदाय के बहुमूल्य अर्थों को सरल संस्कृत-तमिल भाषा में दर्शाता है और यह केवल एक आचार्य से शिष्य को व्यक्तिगत आधार पर प्राप्त होता था।

श्री पिळ्ळै लोकाचार्य अन्ततः हमारे सत्सांप्रदाय के अगले मार्ग दर्शक हुए और वे अपने शिष्यों को श्रीरंग में सत्सांप्रदाय के विषयों पर आधारित ज्ञान का शिक्षण दे रहे थे। एक बार मणप्पाक्कतु नम्बि श्री वरदराज भगवान के पास जाकर उनसे शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करते है। श्री वरदराज

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. ०४.११.२०१९

भगवान यह स्वीकार कर उन्हे शिक्षण देने लगे। परंतु श्री वरदराज भगवान बीच में प्रशिक्षण स्थगित कर मणप्पाक्कतु नम्बि को आदेश देते है कि वह श्रीरंग जाये जहाँ इनका स्थगित प्रशिक्षण पुनः आरंभ करेंगे। यह जानकर मणप्पाक्कतु नम्बि खुशी से श्रीरंग की ओर निकल पडे। श्रीरंग में स्थित काट्टळगिय सिंगर मंदिर पहुँच कर वह श्री पिळळैलोकाचार्य के कालक्षेप घोष्टि को देखते है। एक स्तंभ के पीछे छुपकर वह प्रवचन को सुनते हुए उन्हे आश्चर्य होता है कि वह अपने स्थगित प्रशिक्षण को पुनः सुन रहे थे। यह जानकर वह उनके समक्ष प्रत्यक्ष हुए और उनसे पूछा अवरो नीर (क्या आप देव पेरुमाळ है?) और पिळळै लोकाचार्य ने कहा- अवतु, येतु (जी हाँ, अब क्या करुँ)... यह घटना से स्पष्ट है कि श्री पिळळैलोकाचार्य स्वयम श्री वरदराज भगवान ही है और इसे हमारे पूर्वाचार्यों ने स्वीकार किया है। एक और घटना घटी जिसका विवरण यतीन्द्रप्रणवप्रभावम् में है जो यह साबित करता है कि श्री पिळळैलोकाचार्य स्वयं श्री वरदराज भगवान ही है। श्री पिळळैलोकाचार्य अपने अन्तिम काल के दौरान, ज्योतिष्कुडि में अपने शिष्य नालुर पिळळै को उपदेश देते है की वह तिरुमलै आळवार को सत्संप्रदाय के व्याख्यानों में प्रशिक्षण दे। उसके बाद जब नालुरपिळळै और तिरुमलै आळवार श्री वरदराज भगवान के दर्शन हेतु गए तब श्री वरदराज भगवान ने स्वयम नालुर पिळळै को संबोधित करते हुए कहा - मैंने जिस प्रकार ज्योतिष्कुडि में तुम्हे उपदेश दिया की तुम्हें जरूर तिरुमलै आळवार को अरुलिच्चेयल् के व्याख्यानों में प्रशिक्षण दो - अब तक आपने क्यों मेरे आदेशों का पालन नही किया?

(क्रमशः)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

'सप्तगिरि', 'स्वर्ण जयंती पत्रिका विशेष' में आलेखों का स्वागत!!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान का आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका 'सप्तगिरि' है। कलियुग प्रत्यक्ष दैव श्री वेंकटेश्वर भगवानजी के वैभव एवं तिरुमल क्षेत्र की महानता को हर महीने 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका पाठकों को आलेखों के माध्यम से पहुँचाता है। छः भाषाओं में मुद्रित यह पत्रिका आध्यात्मिक, धार्मिक पत्रिकाओं में विशिष्ट स्थान पायी है।

यह पत्रिका जिज्ञासुओं, महिलाओं व बच्चों... जैसे सभी उम्रवालों के लिए उपयुक्त बनी है। कालप्रवाह में अभिवृद्धि की ओर कदम रखते हुए है। 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के पाठकों से विनती है कि सप्तगिरि पत्रिका को पढ़ने के बाद की अनुभूतियाँ व अनुभव एक लेख के रूप में हमारे कार्यालय में भेजें। उनका परिशीलन करके 'सप्तगिरि' में प्रकाशित किया जाएगा।

आपका लेख अगर डाक से भेजना हो, तो - 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस कांपौंड, के.टी.रोड, तिरुपति-५१७ ५०७' के पते पर भेजने का कष्ट करें।

हिन्दी में डी.टी.पी. करके मेइल से भेजने के लिए- पेज मेकर अनु-फांट्स में या एम.एस.वर्ड में युनिकोड फांट में भी टैप करके फैल के साथ पी.डी.एफ. फैल भी hindisapthagiri50years@gmail.com मेइल आई.डी. के द्वारा भेज दें।

श्री भूतत आल्वार (श्री भूतयोगी स्वामीजी)

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. ०५.११.२०१९

- श्रीमती नीता गोकुलजी दरक
मोबाइल - ९८४४३३५८५८

तिरुनक्षत्र - तुला मास, धनिष्ठा नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीमल्लीपुर

आचार्य - सेनै मुदलियार (श्री विष्वक्सेन)

ग्रंथ रचना - इरंडान् तिरुवन्दादि

जब से श्री भगवान का कृपा कटाक्ष हुवा तब से श्री सरोयोगि स्वामीजी, श्री भूतयोगी स्वामीजी और श्री महाद्योगी स्वामीजी ये तीनों सूरी एक साथ ही रहा करते थे। प्राचीन काल से ही इनकी प्रसिद्धी 'मुदल आल्वार' यानि आद्य सुरीगण ऐसी है।

आल्वारों की सूची में श्री भूतयोगी स्वामीजी द्वितीय आल्वार है। श्री सरोयोगि स्वामीजी के अवतार के दूसरे दिन तुंडीर मण्डल में पूर्व समुद्र के तीर में विराजमान श्रीमल्लीपुर के पुष्प वाटिका के माधवी लता के सर्वोत्तम पुष्प से महातेजस्वी श्री भूतयोगी स्वामीजी का लोकहित के लिए प्रादुर्भाव हुवा। इन्हे भूतःवयर और मल्लीपुरवराधीशर के नामों से भी जाना जाता हैं।

मल्लीपुरवराधीश माधवी कुसुमोद्भवम्।
भूतं नमामियो विष्णोज्ञनिदौपमकल्पयत्।।

श्रेष्ठ मल्लीपुर के स्वामी और माधवी कुसुम से प्रगटित श्री भूतयोगी स्वामीजी को मैं प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने आश्विन मास के धनिष्ठा नक्षत्र में समुद्र तट पर मल्लीपुर नामक क्षेत्र में मालती पुष्प से अवतार लिया और भगवान श्रीमन्नारायण के ज्ञान दीप को जलाकर उनके अनन्य कृपा पात्र बने। ऐसे परम भक्त श्री भूतयोगी स्वामीजी जो भगवान कि गदा के अवतार थे, उनको समस्त लोक प्रणाम करते हैं।

एक बार भ्रमण करते हुवे श्री भूतयोगी स्वामीजी ने श्री सरोयोगि स्वामीजी से स्थान की याचना की और संकुचित जगह में दोनों बैठ गए। थोड़ी ही देर में भ्रांतयोगी स्वामीजी वहाँ पधारे फिर तीनों योगी खड़े रहकर भगवद चिन्तन तथा गुणानुवाद करते हुए रात्री व्यतित करने लगे। ''**एक श्रीवैष्णव दूसरे श्रीवैष्णव को देखकर दण्डवत प्रणाम करें।**'' इस प्रकार परस्पर में प्रणाम कर सानन्द अनुभव को प्राप्त किये। इसी मौके को देखकर श्रीत्रिविक्रम भगवान इन तीनों में अत्यद्भुत अनुग्रह को प्रकाशित करने के लिये गाढ़ अंधकार और घनघोर वर्षा को उत्पन्न कर खुद बड़ा भारी श्रीविग्रह लेकर इन तीनों के बीच में उपस्थित हो गर्दी उत्पन्न किये। हमारे बीच यह चौथा कौन हैं देखने के लिये श्री भूतयोगी स्वामीजी ने अपने प्रेम का दीप बनाके, अपने लगाव का तेल और ज्ञान का प्रकाश लेकर उज्वल किया। और उसके दिव्य प्रकाश में भगवान श्रीमन्नारायण को देखा। भगवद दर्शन कर श्री भूतयोगी स्वामीजी ने अपना भगवद अनुभव लोकहितार्थ प्रगट करने लिये १०० गाथाओं से युक्त ''**इरंडान् तिरुवन्दादि**'' इस द्राविड दिव्यप्रबन्ध कि रचना कि। उस समय से वे तीनों आल्वार तिरुक्कोवलूर आयन और अन्य अर्चावतार भगवान के स्वरूपों का साथ-साथ अनुभव करते हुए इस लीला विभूति में अपना जीवन बिताये। उन्होंने साथ मिलकर और भी कई दिव्यदेशों-क्षेत्रों के दर्शन किये। इन्हें ''ओडि तिरियुम योगीगळ'' अर्थात् निरन्तर तीर्थ यात्रा में रहने वाले योगि भी कहा जाता हैं।

श्री भूतयोगी स्वामीजी का वैभव

१. भूतत यानि 'सत्ता को प्राप्त हुये।' श्री भगवान के स्वरूप गुण विभूति इत्यादि विशेषों का पूर्ण अनुभव होने के कारण वो सत्ता को प्राप्त हो गए थे।

२. इनका अवतार पुष्प गर्भ से हुआ है इसीलिए ये अयोनिज (जो माता कि गोद से नहीं पैदा होता) माने गये है।

३. द्वापर युग के समाप्ति में और कलियुग के शुरुआत में इनका अवतार हुआ।

४. श्री विष्वक्सेनजी श्री भूतयोगी स्वामीजी के आचार्य हुये।

५. वें बचपन से अन्न-पानादि से रहित और कैंकर्य के सुरस को पीने को सदा तत्पर रहकर, शब्दादि विषयों से सदैव अपरिचित रहे।

६. इन्हें जन्म से ही भगवान के प्रति अत्यंत प्रीति थी। भगवान का परिपूर्ण अनुग्रह उन्हें प्राप्त था और उन्होंने जीवन पर्यंत भगवत अनुभव का आनन्द प्राप्त किया।

७. वे सदा परमात्मा के दास रूपी मुख्य रसिक, भगवत भक्ति तथा ज्ञान वैराग्य से सदा सम्पन्न थे।

८. अपना भगवत अनुभव लोकहितार्थ प्रगट करने के लिए उन्होंने सौ गाथाओं से युक्त 'इरंडान् तिरुवंदादि' नामक ग्रंथ की रचना की।

९. अपने ग्रंथ में पृथ्वी पर विराजित भगवान श्रीविष्णु के १०८ दिव्यदेशों में से श्री भूतयोगी स्वामीजी ने श्रीरंगम्, श्रीकांची, श्रीदेहली और श्री मल्लीपुरम क्षेत्र का वर्णन किया है।

१०. श्री भूतयोगी स्वामीजी ने लगभग १५ दिव्यदेशों में जाकर मंगलाशासन किया।

आचार्य आल्वारों द्वारा श्री भूतयोगी स्वामीजी का वैभव प्रकाशन

१. श्री शठकोप स्वामीजी कहते हैं, ''भगवान की महानता/प्रभुत्वता को प्रथम बार सुमधुर तमिल भाषा में इन्होंने ही प्रकाशित किया हैं।''

२. श्री कलिवैरिदास स्वामीजी, इन्हें, ''सेन्तमिळ पाडुवार'' - मधुर तमिल भाषा में गाने वाले और ''इन्कवि पाडुम परमकविगळ''- तमिल भाषा के महान पंडित कहकर संबोधित करते हैं।

३. श्री वरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्नमाला में बताते हैं की इन्होंने अपने दिव्य तमिल पाशुरों से इस जगत को प्रकाशित किया।

४. पिळ्ळै लोकम् जीयर् बताते हैं की श्रीवैष्णव संप्रादय में मुदल आल्वारों को उसी प्रकार माना जाता है जिस प्रकार **प्रणव** (**ॐकार**) को आरंभ के रूप में माना जाता है।

५. श्री वरवरमुनि स्वामीजी बताते हैं की तुला मास की महत्ता और वैभव श्री भूतयोगी स्वामीजी के अवतार के कारण ही है।

६. पेरियावाच्चान पिल्लै के तिरुनेडुताण्डगम व्याख्यान के अवतारिका (भूमिका खंड) में बताया है कि मुदल आळवार, भगवान की परतत्त्वता/प्रभुत्वता पर अधिक केन्द्रित थे। इसी कारण, प्रायः वे भगवान के त्रिविक्रम अवतार की स्तुति किया करते थे।

श्री नडुविल् तिरुवीदिप् पिळळै भट्टर्

(मद्यवीदि श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी)

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. ०५.११.२०१९

- श्री गोविंद मधुसूदन रांदड़
मोबाइल - ०८३५७२५०२०९

तिरुनक्षत्र - अश्विनी, धनिष्ठा

अवतार स्थल - श्रीरंगम्

आचार्य - उनके पिता (भट्टर स्वामीजी), श्री कलिवैरिदास स्वामीजी

शिष्य - वलमझगियार

परमपद प्राप्त स्थान - श्रीरंगम्

कार्य - श्रीसहस्त्रगीति कि व्याख्या १२५००० पड़ी, पिष्टपसु निर्णयम, अष्टाक्षर दीपिकै, रहस्य त्रय, द्वय पीतक्कट्टु, तत्त्व विवरणम, श्रीवत्स विंशति आदि।

वह श्री पराशर भट्टर स्वामीजी के पुत्र या पोते हैं। उनका नाम उत्तण्डा भट्टर रखा गया और तत्पश्चात वे नडुविल् तिरुवीदिप् पिळळै भट्टर स्वामीजी नाम से प्रसिद्ध हुए। **ध्यान देना** : पेरिय तिरुमुडी अडैवु में यह लिखा गया है कि वे श्री पराशर भट्टर स्वामीजी के पुत्र हैं और ६००० पड़ी गुरु परम्परा प्रभावं में उन्हें श्री कुरेश स्वामीजी का पोता कहा गया है। पट्टोलै में उन्हें श्री वेदव्यास भट्टर का परपोता कहा गया है। उनकी पहचान के बारें में बहुत सही जानकारी कहीं भी नहीं है परंतु वें श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के अति प्रिय शिष्य हुये।

श्री कलिवैरिदास स्वामीजी का समय श्रीरंगम् में श्रीवैष्णवों के लिये बहुत आनंदमय और सुनहरा समय कहा गया है निरन्तर भगवद् अनुभव के कारण बिना कोई बाधा के, श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के बहुत शिष्य और अनुयायी थे जो उनके कालक्षेप में नियमित से उपस्थित होते थे। श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी का श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के प्रति ज्यादा अच्छा भाव नहीं था। अमीर परिवार से होने के कारण उनमें अभिमान आ गया था और प्रारम्भ में वे श्री कलिवैरिदास स्वामीजी का आदर भी नहीं करते थे।

एक बार श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी राजा के दरबार में जा रहे थे। राह में वे श्री पिन्बळगिय पेरुमाल जीयर से मिलते हैं और उन्हें भी राजा के दरबार में चलने के लिये न्योता देते हैं। क्योंकि उनके पारिवारिक परम्परा के कारण जीयर स्वामीजी को भट्टर स्वामीजी के परिवार के प्रति आदर था इसलिये वह उनके साथ चले गए। राजा ने उनको सम्मान देकर उनके हिसाब से आसन दिया। क्योंकि राजा अच्छा शिक्षित था भट्टर की समझधारी परखना चाहते थे और उन्हें श्रीरामायण से एक प्रश्न पूछा। वे कहते हैं ''श्रीराम स्वयं करते हैं कि वे मनुष्य हैं और दशरथ के प्रिय पुत्र हैं। परन्तु श्रीजटायुजी के अंतिम समय में श्रीराम यह मंगल कामना करते हैं कि वह श्रीवैकुंठ पहुँच जाये। यह अंतर्विरोधी है?''। भट्टर शान्त हो गये और कुछ भी अच्छा अर्थ सहित न समझा सके। कुछ कार्य के कारण राजा का ध्यान दूसरी तरफ चला गया। उस समय भट्टर ने जीयर स्वामीजी के पास जा कर पूछा ''श्री कलिवैरिदास स्वामीजी इसे कैसे समझाते थे?''। जीयर उत्तर देते हैं ''श्री कलिवैरिदास स्वामीजी'' इसे 'सत्येना लोकान जयति' श्लोक से समझाते हैं। इसका अर्थ है, एक पूर्ण सत्यवादि मनुष्य सभी संसार का नियंत्रण कर सकता है - इसलिये केवल उनके सच्चाई के ही कारण वह संसार पर विजयी

हो सकते हैं। जब राजा पुनः इधर ध्यान करते हैं, भट्टर जो समझदार थे, राजा को यह बात समझाते हैं और राजा उसी क्षण उस तत्त्व को स्वीकृत कर भट्टर का बहुत धन के साथ सम्मान करते हैं। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के प्रति कृतज्ञ होकर भट्टर, जीयर को उन्हें श्री कलिवैरिदास स्वामीजी से जोड़ने के लिये कहते हैं और उसी क्षण श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के तिरुमाली में जाकर वह राजा द्वारा प्रदान सारा धन श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के चरण कमलों में अर्पित कर देते हैं। भट्टर, श्री कलिवैरिदास स्वामीजी से कहते हैं कि ''मैंने यह सारा धन आपके केवल १ वर्णन से प्राप्त किया है'' और सारा धन उन्हें अर्पण कर देते हैं। इसके पश्चात वे श्री कलिवैरिदास स्वामीजी से कहते हैं कि ''इतने समय तक मैं आपका अमूल्य साथ / संचालन से वंचित रहा। अभी से मैं आपकी ही सेवा करुँगा और आपसे सम्प्रदाय के तत्त्वों को सीखूँगा''। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी भट्टर को गले लगाते हैं और सम्प्रदाय के तत्त्वों को सिखाते हैं।

श्री कलिवैरिदास स्वामीजी भट्टर को पूरी तरह श्रीसहस्त्रगीति का पाठ सिखाते हैं। भट्टर उसे सुबह सुनते अर्थ पर विचार कर हर रात में विस्तार से दस्तावेज बनाते। एक बार उपदेश समाप्त हो जाने के बाद वे उस व्याख्यान को श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के चरण कमलों में अर्पित कर देते हैं। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी श्रीसहस्त्रगीति कि व्याख्या १२५००० पड़ी को अच्छी तरह से देखते हैं (जो श्रीमहाभारत की तरह लम्बी है)। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी घबरा जाते हैं कि अगर इतने विस्तार से व्याख्या है तो लोग गुरु शिष्य के सीखने / सिखाने के तरीके को भूलकर ग्रन्थ वाचन कर स्वयं ही किसी अंतिम निर्णय पर आ जायेंगे। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी भट्टर को समझाते हैं कि जब पिल्लान ६००० पड़ी व्याख्यान किये (विष्णुपुराण जितना बड़ा) तब उन्होंने श्रीरामानुज स्वामीजी से आज्ञा ली थी। परन्तु यहाँ भट्टर ने श्रीकलिवैरिदास स्वामीजी से व्याख्यान लिखने के लिये आज्ञा नहीं ली। हालांकि भट्टर ने कहा उन्होंने केवल दस्तावेज बनाया है जो श्री कलिवैरिदास स्वामीजी ने कहा है। उन्होंने स्वयं अपने मन से कुछ नहीं लिखा। अन्त में श्री कलिवैरिदास स्वामीजी ग्रन्थ के प्रकाशन को न माने, इसको नष्ट कर दिया।

(**ध्यान देना :** यतीन्द्र प्रवण प्रभांव में इस घटना को पहचाना गया कि जब आचार्य का परमपद होता है तो शिष्य / पुत्र को उनका सर मुंड़ाना होता है और बाकि और जो शिष्य नहीं हैं उन्हें मुख और शरीर के केश निकालना होता है। जब श्री कलिवैरिदास स्वामीजी परमपद को प्रस्थान करते हैं, श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी अपना सर मुंड़ाते हैं जैसे उनके बाकि शिष्य को करना चाहिये। भट्टर के एक भाई यह देखकर दुःखी होते हैं और उनसे शिकायत करते हैं यह कहकर कि श्री कुरेश स्वामीजी के परिवार में जन्म लेकर क्यों कोई श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के परमपद प्रस्थान के लिये सर मुंड़ाता है। भट्टर अपने भाई को व्यंग्यात्मक ढंग से उत्तर देते हैं ''ओ! मैंने श्री कुरेश स्वामीजी के परम्परा का अपमान किया है। अब आप इसे कैसे सुधारेंगे?'' भट्टर के भाई ऐसे व्यंग्यात्मक शब्द ग्रहण नहीं कर सके और श्रीरंगनाथ भगवान के पास जाकर उनकी इस कार्य के लिये शिकायत करते हैं। श्री रंगनाथ भगवान भट्टर को बुलाकर अर्चक के जरिये पूछते हैं कि ''जब मैं जीवित हूँ तुमने ऐसा क्यों किया?'' (श्रीरंगनाथ भगवान अपने आप को पराशर भट्टर और उनके वंश के पिता मानते हैं)। भट्टर उत्तर देते हैं कि ''कृपया मेरे इस अपचार को क्षमा करें''। और आगे कहते हैं ''असल में मुझे तो श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के प्रति सम्पूर्ण समर्पण होना चाहिये था क्योंकि यह प्राकृतिक है जो भी श्री कुरेश स्वामीजी (श्रीवैष्णव के प्रति समर्पण) के वंश से आता है वह मुख और शरीर के केश निकालता है। बल्कि मैंने केवल अपना सर मुंडाया जो यह दिखाता है कि मैंने एक शिष्य / पुत्र के नाते बहुत कम अनुष्ठान किया है। क्या मेरे थोड़ा सा आदर के कारण आप नाराज हैं?'' भट्टर का श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के प्रति समर्पण देखकर श्रीरंगनाथ भगवान बहुत खुश होते हैं और भट्टर

को तीर्थ, पुष्प माला और वस्त्र के साथ सम्मान करते हैं। श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी की ऐसी महिमा थी।

इन व्याख्यानों में श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी शामिल घटना बतायी गयी है। इसे हम अब देखेंगे :

श्रीसहस्त्रगीति - ९.३ - श्री कलिवैरिदास स्वामीजी ईडु प्रवेसं (प्रस्तावना) - इस पद में श्रीशठकोप स्वामीजी नारायण नमः (और मन्त्र) कि महिमा बताते हैं। मुख्य ३ व्यापक मन्त्र है (वह मन्त्र जो भगवान कि सर्व उपस्थिति दर्शाता है) वह है अष्टाक्षर (ॐ नमः नारायणाय), शदक्षरम (ॐ नमः विष्णवे) और ध्वाधसाक्षारम (ॐ नमः भगवते वासुदेवाय)। श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी कहते हैं कि प्रणवम का अर्थ, नमः का अर्थ, भगवान का सर्व उपस्थिति आदि सभी ३ व्यापक मंत्रों में बताया गया है परन्तु आल्वारों के समीप तो नारायण मन्त्र हीं है। ध्यान : नारायण कि महत्वता मुमुक्षुप्पड़ी के शुरुवात में श्रीपिल्लै स्वामीजी बोलते हैं।

वार्ता माला में भी श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी से संबन्धित कुछ घटनाये हैं।

२१६ - श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी एक बहुत सुन्दर वार्तालाप श्री कलिवैरिदास स्वामीजी और श्रीपश्चात् सुन्दर देशिक स्वामीजी के बीच अवतरण किया। देशिक स्वामीजी यह प्रश्न पूछते हैं कि ''सभी मुमुक्षु आल्वार जैसे होने चाहिये (पूर्णतः भगवान पर निर्भर और भगवान के अनुभव में हीं रहना)। परन्तु फिर भी हम में सांसारिक इच्छा होती है। हमें इसका परिणाम (परमपद में कैंकर्य प्राप्ति) कैसे प्राप्त होगा जो आल्वारों को प्राप्त हुआ?'' श्री कलिवैरिदास स्वामीजी उत्तर देते हैं हालाँकी हमें वहीं उन्नति प्राप्त नहीं होगी जो आल्वारों को प्राप्त हुयी परन्तु अपने आचार्य कृपा से जो पवित्र है, भगवान हमारे मरने और परमपद पहुंचने से पहिले वही भाव (आल्वारों जैसी) हमारे में भी प्रगट करेंगे। इसलिये हमारे परमपद पहुंचने से पूर्व हम पवित्र हो जाएँगे और निरंतर भगवान का कैंकर्य करने की चाह रहेगी।

४१० - श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी यह समझाते हैं कि एक श्रीवैष्णव को कैसे होना चाहिये -

संसारियों का दोष देखते समय उनको सुधारने के लिये हम भगवान की तरह उतने सक्षम नहीं हैं इसीलिए उन्हें अनदेखा रहना चाहिए।

सात्विक जनों (श्रीवैष्णवों) में दोष देखते समय, क्योंकि वे पूरी तरह भगवान पर निर्भर हैं वे भगवान की कृपा से अपने को दोष मुक्त करने की क्षमता रखते हैं। हमे उन्हें उनदेखा रहना चाहिये।

जैसे कोई व्यक्ति अपने शरीर पर रसायनिक पदार्थ लगा लेता है तब अग्नि लगने पर भी उसे चोट नहीं लग सकती है वैसे ही हमें भगवद् ज्ञान से ढके हुए रहना चाहिये ताकि सांसारिक इच्छा और मुद्दों से हम प्रभावित नहीं हो सके।

हममें ज्ञान के दो पहलु होनी चाहिये - १. हमे परमपद पहुँचने की बहुत बडी इच्छा होनी चाहिये जो पूर्णतः आध्यात्मिक है और २. हमे इस संसार बन्धन से छूटने की भी बहुत बडी इच्छा होनी चाहिये (जो अज्ञानता का स्थान है) अभी तक, इस संसार के बारे में हमारा ज्ञान नादानी की अवस्था जैसे रहना बहुत जरुरी हैं, परंतु अगर हमे इस संसार से थोडासा भी लगाव रहा तो वह हमे नीचे खींच लेगा और हमे इस संसार में ही रख लेगा।

अतः हमने श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी के जीवन के सुन्दर अंश देखे। वे बहुत बडे विद्वान और श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के प्रिय शिष्य थे। हम भगवान के चरण कमलों में यह प्रार्थना करते हैं कि हममें भी थोडी सी भागवत निष्ठा आ जाये।

श्री उत्तण्ड भट्टर स्वामीजी तनियन

लोकाचार्य पदासक्तं मध्यवीधि निवासिनम्।
श्रीवत्सचिन्नवंशाब्दिसोमम् भट्टारार्यम् आश्रये।।

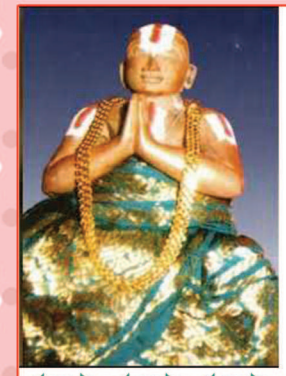

एरुम्बी अप्पा

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. १०.११.२०१९

तिरुनक्षत्र - अश्विन मास, रेवती नक्षत्र

अवतार स्थल - एरुम्बी

आचार्य - श्री वरवरमुनि स्वामीजी

शिष्य - पेरियवप्पा (उनके पुत्र), सेनापति आलवान

रचनाएँ - पूर्व दिनचर्या, उत्तर दिनचर्या, वरवरमुनि शतकम, विलक्षण मोक्ष अधिकारी निर्णयं, उपदेश रत्नमाला के लिए अंतिम पाशुर (मन्नुयिर्गाल...)।

एरुम्बी अप्पा, श्री वरवरमुनि स्वामीजी के अष्ट दिग्गजों में एक हैं (आठ प्रमुख शिष्य जिन्हें संप्रदाय के संरक्षण के लिए स्थापित किया)। उनका वास्तविक नाम देवराजन है।

अपने गाँव में रहते हुए और धर्मानुसार कार्य करते हुए, एक बार एरुम्बी अप्पा ने श्री वरवरमुनि स्वामीजी के बारे में सुना और उनके प्रति आकर्षित हुए। श्री वरवरमुनि स्वामीजी के समय को हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा नल्लदिक्काल (सुनहरा समय) हो जाता है। उदहारण के लिए : श्रीरामानुज स्वामीजी के समय, किसी शैव राजा के उपद्रव की वजह से उन्हें श्रीरंगम् छोडकर तिरुनारायणपुर जाना पड़ा। श्रीभट्टर के समय में, एक अवज्ञाकारी राजा, जो स्वयं आलवान का शिष्य था, के उपद्रव की वजह से उन्हें तिरुक्कोट्टीयूर जाना पड़ा। श्रीपिल्लै लोकाचार्य के समय में, मुस्लिम आक्रमणकारियों के कारण उन्हें श्रीरंगम् छोड़कर दक्षिण में जाना पड़ा। परंतु जब श्री वरवरमुनि स्वामीजी श्रीरंगम् में पधारे, उन्होंने मंदिर पूजा विधि को पुनःस्थापित किया, आचार्य पुरुषों के पूर्व सम्मान को स्थापित किया और अत्यंत महत्वपूर्ण सभी लुप्त ग्रंथों को एकत्रित किया और उन्हें यथोचित अभिलिखित किया। वे निरंतर पूर्वाचार्यों के व्याख्यान पर आधारित अरुलिचेयल के कालक्षेप किया करते थे।

जब श्री एरुम्बी अप्पा ने श्री वरवरमुनि स्वामीजी के वैभव के बारे में सुना, वे उनसे भेंट करने हेतु श्रीरंगम् पहुँचे। जब उन्होंने मठ में प्रवेश किया, श्री वरवरमुनि स्वामीजी तिरुवायमोली के प्रथम पाशुर- ''उयार्वर उयर नलं...'' का भावार्थ समझा रहे थे। वेद और वेदांत के उच्च अर्थों द्वारा भगवान के परतत्त्व को समझाने में श्री वरवरमुनि स्वामीजी की शैली से एरुम्बी अप्पा मुग्ध हो गये। तद्पश्चात श्री वरवरमुनि स्वामीजी उनका स्वागत करते हैं और तदियाराधन में भाग लेने के लिए उनसे कहते हैं। परंतु एरुम्बी अप्पा मठ में प्रसाद पाने से मना कर देते हैं, यह कहते हुए कि सामान्य शास्त्र के अनुसार हमें सन्यासी का, सन्यासी के पात्र से अथवा सन्यासी द्वारा दिया गया भोजन स्वीकार नहीं करना चाहिए - और उसे स्वीकार करने पर चान्द्रायण व्रत करना होगा। वे विशेष शास्त्र को नहीं जान पाए, जैसा तिरुवायमोली के ४१वें पाशुर में बताया गया है- ''तरुवरै पुनिदमनरे'' (जब महान श्रीवैष्णव कृपा से

प्रसाद देवें, वह बहुत पवित्र होता है और हमें उसे स्वीकार करना चाहिए)।

तद्पश्चात वे अपने पैतृक निवास लौटते हैं। प्रातः अनुष्ठान करने के पश्चात, जब अपने तिरुवाराधन कक्ष के द्वार खोलते हैं, उनके तिरुवाराधन पेरुमाल, चक्रवर्ती भगवान श्रीराम की प्रेरणा से द्वार नहीं खुलते। अत्यंत दुःख और चिंता से वे उस दिन प्रसाद नहीं पाते और फिर शयन के लिए प्रस्थान करते हैं। उस रात उनके स्वप्न में, चक्रवर्ती भगवान श्रीराम पधारते हैं और उन्हें श्री वरवरमुनि स्वामीजी के आश्रित होने का निर्देश देते हैं। भगवान उनसे कहते हैं कि श्री वरवरमुनि स्वामीजी ही आदिशेष है, जिन्होंने रामावतार के समय में लक्ष्मण के रूप में अवतार लिया था। वे कहते हैं श्री वरवरमुनि स्वामीजी पीड़ित संसारियों के हितार्थ फिर से प्रकट हुए हैं। वे उन्हें निर्देश देते हैं कि वे श्री वरवरमुनि स्वामीजी की शरण हो जाएँ और उचित तत्त्व ज्ञान विकसित करे। यह सुनकर एरुम्बी अप्पा, श्रीरंगम् पहुँचते हैं और कोयिल कन्दाडै अण्णन् के पुरुष्कार से, श्री वरवरमुनि स्वामीजी का आश्रय लेकर, अष्ट दिग्गजों में एक हुए। श्री वरवरमुनि स्वामीजी का आश्रय लेते हुए, उन्होंने श्री वरवरमुनि स्वामीजी की दैनिक गतिविधियों की प्रशंसा में अनेक श्लोकों कि रचना की, कालांतर में जिनका संकलन उन्होंने दिनचर्या में किया।

एरुम्बी अप्पा ने कुछ समय के लिए श्री वरवरमुनि स्वामीजी के साथ रहकर, सभी रहस्य ग्रंथों कि शिक्षा प्राप्त की और फिर अपने पैतृक गाँव लौटकर, वहां अपना कैंकर्य जारी रखा। वे सदा अपने आचार्य का ध्यान किया करते थे और पूर्व और उत्तर दिनचर्या का संकलन कर (जिनमें श्री वरवरमुनि स्वामीजी की दैनिक गतिविधियों का चित्रण किया गया था) एक श्रीवैष्णव द्वारा उन्हें श्री वरवरमुनि स्वामीजी को समर्पित किया। एरुम्बी अप्पा की निष्ठा देखकर श्री वरवरमुनि स्वामीजी अत्यंत प्रसन्न हुए और उनकी बहुत प्रशंसा की। वे एरुम्बी अप्पा को उनसे भेंट करने के लिए आमंत्रित करते हैं। एरुम्बी अप्पा कुछ समय अपने आचार्य के साथ रहते हैं और फिर नम्पेरुमाल के समक्ष श्री वरवरमुनि स्वामीजी के भागवत विषय कालक्षेप में भाग लेते हैं। तत्पश्चात वे पुनः अपने गाँव लौट जाते हैं।

श्री वरवरमुनि स्वामीजी के परमपद गमन का समाचार सुनकर, एरुम्बी अप्पा अपने आचार्य के वियोग में दुःख से भर जाते हैं। आचार्य द्वारा उन पर की गयी कृपा का गुणगान करते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें भी शीघ्रातिशीघ्र अपनी सेवा में स्वीकार करे।

एरुम्बी अप्पा की महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है ''विलक्षण मोक्ष अधिकारी निर्णय''। यह एरुम्बी अप्पा और उनके शिष्यों जैसे सेनापति आलवान आदि के बीच हुए वार्तालाप का संकलन है। इस सुंदर ग्रंथ में एरुम्बी अप्पा, अत्यंत दक्षता से आल्वार/आचार्यों की श्रीसूक्तियों के मिथ्याबोध से उत्पन्न होने वाले संदेह को स्पष्ट करते हैं। उन्होंने पूर्वाचार्यों की श्रीसूक्तियों के आधार पर संसार में वैराग्य विकसित करने और पूर्वाचार्यों के ज्ञान और अनुष्ठान के प्रति अनुराग का महत्व बताया और हमारे द्वारा उसे जीवन में अपनाने के लिए जोर दिया है (उसके बिना यह मात्र सैद्धांतिक ज्ञान होता)।

हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा बताया गया है कि श्रीवैष्णवों को पूर्व और उत्तर दिनचर्या (श्री वरवरमुनि स्वामीजी के उच्च / अतुलनीय जीवनशैली का स्मरण) का पाठ किये बिना प्रसाद नहीं पाना चाहिए। यह इतनी सुंदर रचना है कि इसे सुनकर पाषाण का हृदय भी पिघल जाये।

एरुम्बी अप्पा की तनियन (पूर्व/उत्तर दिनचर्या की तनियन)

सौम्यजामातृयोगीन्द्र चरणाम्भुज षट्पदम्।
देवराजगुरुं वन्दे दिव्यज्ञान प्रदं शुभम्।।

श्री कूर कुलोत्तम दासर्

- श्री चन्द्रकान्त घनश्यामदास लाहोटी
मोबाइल - ९४४८६९२९९२

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. १६.११.२०१९

जन्म नक्षत्र - अश्विनी, आद्रा

अवतार स्थल - श्रीरंगम्

आचार्य - वडक्कू तिरुवीधि पिल्लै (कालक्षेप आचार्य श्री पिल्लै लोकाचार्य और श्री अलगिय मणवाल पेरुमाल नायनार्)

श्री कूर कुलोत्तम दासर् ने श्री शैलेश स्वामीजी को फिर से संप्रदाय में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे श्री पिल्लै लोकाचार्य के निकट सहयोगियों में से एक हैं और उन्होंने उनके साथ तिरुवरंगन उला (नम्पेरुमाल की कलाब काल की यात्रा) के दौरान यात्रा की थी। ज्योतिषकुड़ी में, श्री पिल्लै लोकाचार्य अपने अंतिम समय में, श्री कूर कुलोत्तम दासर, तिरुक्कण्णकुड़ी पिल्लै, तिरुप्पुल्कुली जीयर, नालूर् पिळ्ळै और विलान्चोलै पिल्लै को श्री शैलेश स्वामीजी (जिनका पंच संस्कार बहुत ही छोटी आयु में श्री पिल्लै लोकाचार्य के चरण कमलों में हुआ था) को संप्रदाय के सभी दिव्य ज्ञान प्रदान करने और उन्हें संप्रदाय के प्रमुख बनाने का निर्देश देते हैं।

पहले कूर कुलोत्तम दासर् श्री शैलेश स्वामीजी से भेंट करने जाते हैं, जो मदुरै के राज्य में मंत्री थे। श्री शैलेश स्वामीजी की प्रशासन और तमिल भाषा की विशेषज्ञता के कारण और राजा की अल्प आयु में मृत्यु के बाद वे राज्य के उत्तरदायित्व और युवराज की देखभाल करते थे। जब श्री कूर कुलोत्तम दासर् वहाँ पहुँचे, उन्होंने श्री शठकोप स्वामीजी का तिरुविरुत्तम का पाठ शुरू किया। श्री शैलेश स्वामीजी पालकी में अपने नगर-भ्रमण पर थे और तभी उनका ध्यान कूर कुलोत्तम दासर् पर जाता है। पालकी से नीचे उतरे बिना ही वे श्री कूर कुलोत्तम दासर् से उस प्रबंध का अर्थ पूछते और प्रति उत्तर में दासर उन पर थूकते हैं। इसे देखकर श्री शैलेश स्वामीजी के परिचारक उत्तेजित हो जाते हैं और श्री कूर कुलोत्तम दासर् को दंड देने के लिए आगे बढ़ते हैं परंतु श्री शैलेश स्वामीजी द्वारा रोक दिए जाते हैं, जो दासर की महानता को जान जाते हैं।

श्री शैलेश स्वामीजी अपने महल को लौटते हैं और सम्पूर्ण दृष्टांत अपनी सौतेली माता को बताते हैं जो उनका मार्गदर्शन कर रही थी। वे उन्हें श्री पिल्लै लोकाचार्य से उनका संबंध स्मरण कराती है और श्री कूर कुलोत्तम दासर् की महिमा बताती है। फिर वे कूर कुलोत्तम दासर् को ढूँढना प्रारंभ करते हैं।

एक बार श्री शैलेश स्वामीजी हाथी पर जा रहे थे, तब कूर कुलोत्तम दासर् एक ऊँची जगह पर चढ़ जाते हैं, जहाँ से आल्वार उन्हें देख सके। श्री शैलेश स्वामीजी उन्हें पहचान जाते हैं और तुरंत हाथी से नीचे उतरकर कूर कुलोत्तम दासर् के चरण कमलों में लेट जाते हैं और उनका वैभवगान करते हैं। फिर वे कूर कुलोत्तम दासर् को अपने महल में लेकर आते हैं और श्री पिल्लै लोकाचार्य द्वारा प्रदान किये हुए सभी मूल्यवान निर्देश उनसे संक्षेप में समझते हैं। उन निर्देशों से पवित्र होकर, वे कूर कुलोत्तम दासर् से विनती करते हैं कि वे प्रतिदिन प्रातः अनुष्ठान में पधारकर उन्हें संप्रदाय विषय का ज्ञान प्रदान करें, क्योंकि

अन्य समय में वह राज्य कार्यों में व्यस्त रहते हैं। वे कूर कुलोत्तम दासर् के लिए वैगै नदी के किनारे निवास की व्यवस्था करते हैं और आजीविका के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ भी उपलब्ध कराते हैं।

कूर कुलोत्तम दासर् प्रतिदिन श्री शैलेश स्वामीजी के पास जाना प्रारंभ करते हैं। एक दिन वे देखते हैं कि श्री शैलेश स्वामीजी ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करते हुए श्री पिल्लै लोकाचार्य की तनियन का पाठ कर रहे थे (ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करते हुए श्री आचार्य चरण का ध्यान करना चाहिए) और बहुत प्रसन्न होते हैं। वे उन्हें सभी दिव्य अर्थों का अध्ययन प्रारंभ करते हैं परंतु एक सुबह वे महल नहीं आ पाए। तब श्री शैलेश स्वामीजी अपने परिचारकों को कूर कुलोत्तम दासर् के पास भेजते हैं, परंतु उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। इसलिए अपने आचार्य के प्रति अत्यंत प्रीति के साथ वे स्वयं उनके पास जाते हैं और कूर कुलोत्तम दासर् उन्हें कुछ समय तक प्रतीक्षा कराते हैं। अंततः वे जाकर कूर कुलोत्तम दासर् के चरण कमलों में गिर जाते हैं और उनसे अपनी गलतियों के लिए क्षमा याचना करते हैं। क्योंकि वे कालक्षेप के समय आते हैं, वे उसमें सम्मिलित होते हैं और कूर कुलोत्तम दासर् का श्री पाद तीर्थ और शेष प्रसाद स्वीकार करते हैं। भगवत दासों के शेष प्रसाद में किसी को भी पवित्र करने की महान क्षमता होती है और उसी प्रसाद के प्रभाव से शैलेश स्वामीजी में भी महान परिवर्तन हुआ। उसे पाने के बाद, श्री शैलेश स्वामीजी ने बारम्बार ''कूर कुलोत्तम् दास नायन् तिरुवडिगले शरणं'' कहना प्रारंभ कर दिया और राज्य और सांसारिक प्रकरणों के प्रति अपने अनुराग को त्याग दिया।

उसके बाद कूर कुलोत्तम दासर् सिक्किल (तिरुप्पुल्लाणि के समीप एक स्थान) के लिए प्रस्थान करते हैं। श्री शैलेश स्वामीजी अपने राज्य के सभी उत्तरदायित्वों को त्यागकर कूर कुलोत्तम दासर् के साथ जाते हैं और वहीं रहते हुए उनकी संपूर्ण सेवा करते हैं। अपने अंतिम दिनों में, कूर कुलोत्तम दासर्, श्री शैलेश स्वामीजी को विलान्चोलै पिल्लै और तिरुक्कण्णकुड़ी पिल्लै के पास जाकर संप्रदाय विषय में और अधिक सीखने का निर्देश देते हैं। अंत में वे श्री पिल्लै लोकाचार्य का ध्यान करते हुए, प्राकृत शरीर को छोड़कर परमपद प्रस्थान करते हैं।

श्री शैलेश स्वामीजी को सुधारने के लिए किये गए उनके अनेक प्रयासों और श्री पिल्लै लोकाचार्य से सीखे हुए दिव्य ज्ञान को श्री शैलेश स्वामीजी तक पहुँचाने में, उनके द्वारा की गयी असीम कृपा के कारण श्री वरवरमुनि स्वामीजी उनकी महिमा का वर्णन करते हुए उन्हें ''कूर कुलोत्तम् दासं उदारं'' से संबोधित करते हैं (वह जो बहुत ही दयालु और उदार है)। रहस्य ग्रंथ कालक्षेप परंपरा में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान है और उनकी महिमा का वर्णन रहस्य ग्रंथों की कई तनियों में किया गया है।

श्री वचन भूषण दिव्यशास्त्र में, यही निर्णय किया गया है कि एक शिष्य के लिए ''आचार्य अभिमान में उत्थारगम्।'' इसके व्याख्यान में श्री वरवरमुनि स्वामीजी समझाते हैं कि एक प्रपन्न के लिए जिसने सभी अन्य उपायों का त्याग किया है, आचार्य कि निर्हेतुक कृपा और श्री आचार्य का यह विचार कि ''यह मेरा शिष्य है'' ही मोक्ष का एक मात्र मार्ग है। पिल्लै लोकाचार्य, कूर कुलोत्तम दासर् और श्री शैलेश स्वामीजी के चरित्र में हम यह स्पष्ट देख सकते हैं। यह पिल्लै लोकाचार्य का श्री शैलेश स्वामीजी के प्रति अभिमान और कूर कुलोत्तम दासर् का अभिमान और अथक प्रयास है, जिन्होंने संप्रदाय को महान आचार्य श्री शैलेश स्वामीजी को दिए, जिन्होंने फिर संप्रदाय को श्री वरवरमुनि स्वामीजी को दिए।

कूर कुलोत्तम दासर् की तनियन

लोकाचार्य कृपापात्रं कौण्डिन्य कुल भूषणम्।
समस्तात्म गुणावासं वन्दे कूर कुलोत्तमम्।।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

९१

श्रीमते रामानुजाय नमः

याने उन लोगों का सौन्दर्य का अभिमान देख कर भगवान उसी वक्त अन्तर्ध्यान हो गये याने उन लोगों को छोड़ कर दूर चले गये।

श्री देवराज गुरु कह रहे हैं कि कहिये महात्माओं अहंकार कितना प्रबल शत्रु है जिसने ऐसे उच्चकोटि के महात्मा गोपीगणों से भी भगवान को दूर हटा दिया। और भी अहंकार की प्रबलता आप लोग श्रवण करिये। जब भगवान अन्तर्ध्यान हो गये तो साथ में श्री राधाजी को भी ले गये थे। कुछ देर बाद वही अहंकार श्री राधाजी में भी आ गया। वह यह सोचने लगी कि मालूम पड़ता है कि सब गोपियों में मैं हीं अत्यन्त सुन्दरी हूँ। इसीसे सब गोपियों को छोड़कर मुझे ही एकान्त में लिए फिरते हैं। इस प्रकार मन में विचार करके अत्यन्त अहंकार में भरकर बोलीं कि मैं अत्यन्त सुकुमारी हूँ इससे ज्यादा चल नहीं सकती। जैसे बने वैसे आप मुझे ले चलिए। इस प्रकार अहंकार भरा वचन सुनकर के आश्चर्य में पड़के भगवान बोले कि अच्छा आप से नहीं चला जाता है तो मेरे कन्धे पर सवार हो लीजिए। भगवान के इस व्यंग वचन को न समझकर श्री राधिकाजी भगवान के कन्धे पर चढ़ने को ज्यों ही अपने श्रीचरण को उठाईं त्योंही भगवान वहाँ से भी अन्तर्ध्यान हो गए। भगवान के अन्तर्ध्यान होने के बाद उन गोपियों को तथा श्री राधाजी को जितना असह्य कष्ट हुआ उतना वर्णन नहीं कर सकते। इसी प्रकार श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध उत्तरार्ध में भी लिखा है कि एक बार श्री रुक्मिणीजी को भी कुछ अहंकार आया। उस अहंकार के नाश होने के लिए उनके साथ भगवान को कुछ रुक्षता का व्यवहार करना पड़ा। इन पूर्वोक्त प्रसंगों से यह विदित होता है कि जहाँ अहंकार रहता है वहाँ भगवान का निवास नहीं होता है। गोपियों में श्री राधिकाजी में भी जब कि अहंकार आने पर भगवान को उनसे दूर हो जाना पड़ा तो और मुमुक्षुओं में अहंकार आने पर यदि भगवान उनसे दूर हो जावें तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। भगवान के अन्तर्ध्यान हो जाने के बाद गोपियों ने जब अपने कर्त्तव्य पर पश्चात्ताप किया तो फिर भगवान भी कृपा करके दर्शन दिये।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओं! जिसको सच्चा मुमुक्षु बनकर रहना हो और भगवान की कृपा सम्पादन करना हो उसको चाहिए कि सबसे पहिले अहंकार को त्याग दे। श्री गोपियाँ, श्री राधिकाजी तथा श्री रुक्मिणीजी आदि जो भगवान के समीपवर्त्ती पार्षद हैं उन लोगों में तो अहंकार आही नहीं सकता है। केवल भगवान इन लोगों को निमित्त करके बाकी मुमुक्षुओं को चेतावनी दिये हैं कि ऐसे-ऐसे बड़ों में भी अहंकार आने पर मैं छोड़ देता हूँ, तो दूसरों की बात ही क्या है? श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओं! भगवान का प्यारा वही हो सकता है कि जिसमें अहंकार न हो। अहंकार का अनेक प्रकार का स्वरूप है। जिसमें पाँच सात प्रधान है। जो लोग सद्गुरु के कृपा पात्र नहीं होते हैं, जिनको स्वरूप ज्ञान नहीं रहता है, आत्मा क्या है प्रकृति क्या है, यह विवेक जिनमें नहीं रहता है, उन लोगों में अहंकार बहुत आता है। मैं बड़ा विद्वान हूँ, मैं बड़ा रूपवान हूँ, मैं बहुत धनवान हूँ, सबसे मेरी ऊँची जाती है, मैं बहुत कुटुम्ब वाला हूँ, मैं बहुत बुद्धिमान हूँ, मैं बहुत बलवान हूँ, मेरी मान प्रतिष्ठा सबसे ज्यादा है, इस प्रकार भगवद्विमुखी लोग अनेक प्रकार का अहंकार किया करते हैं। यह नहीं समझते कि सारी शक्ति तो भगवान की दी हुई है। भगवान अपनी शक्ति लेलें तो बल, रूप, विद्या, यौवन कहाँ रह जायगा। और सद्गुरुओं के कृपा पात्र जो ज्ञानी महात्मा लोग हैं

वे भूलकर के भी अहंकार नहीं करते हैं। मुमुक्षु सत्पुरुषों का तो स्वभाव ही लोक विलक्षण होता है। जैसे किसी का कहा है-

"गर्व नोद्वहते न निन्दति परान्नो भाषते निष्ठुरं।
श्रुत्वा केनचिदप्रियं च सहते क्रोधंच नालम्बते।।
श्रुत्वा, काव्य मलक्षणं परिकृतं संतिष्ठते मूकवद्।
दोषां श्च्छादयते स्वयं न कुरुते ह्येतत्सतां लक्षणम्।।"

एक मुमुक्षु पुरुष अपने गुरु से पूछे कि गुरू जी महाराज! सत्पुरुषों का लक्षण क्या है? सो कृपा करके बताइये! गुरू जी बोले कि सुनाता हूँ, ध्यान देकर सुनो। इतना कहकर ऊपर में जो श्लोक कहा हूँ उसीको सुनाया। श्लोकार्थ यह है कि सत्पुरुष लोग कभी भी किसी बात का अहंकार नहीं करते हैं। न किसी की कभी निन्दा करते हैं। अप्रिय वचन भी किसी से नहीं बोलते हैं। उनकी कोई निन्दा कर दे या उन्हें कोई किसी प्रकार का अप्रिय वचन कह दे तो उसको सह जाते हैं। और उस अप्रिय वचन बोलने वाले के ऊपर क्रोध भी नहीं करते हैं। दूसरे से कहा हुआ दोषयुक्त पदों को भी श्रवण करके अनजान के समान गुपचुप सुन लेते हैं, दूसरे के दोषों को छिपाते हैं, दोषों को जानते हुए भी प्रगट नहीं करते हैं। दस लोगों में इसका अपमान न हो जाय इस विचार से उन दोषयुक्त पदों के सुधारने की भी उस वक्त चेष्टा नहीं करते हैं। यही सत्पुरुषों के लक्षण हैं। श्री देवराज गुरु कहते हैं हे महात्माओं! कहने का सारांश इतना ही है कि मुमुक्षुओं को किसी बात का अहंकार नहीं करना चाहिए। इस चेतन का जाति प्रयुक्त, विद्याप्रयुक्त, देश प्रयुक्त, ग्रामप्रयुक्त जो नाम है सो अनर्थ के हेतु हैं। यह बीच ही हुआ है और बीच ही में नष्ट हो जाता है। यह चेतन अनादि से परमात्मा का दास है और यही इसका नाशरहित सच्चा नाम है। जैसे बादलों से चन्द्रमा ढक जाते हैं और बादलों के नाश हो जाने पर यथार्थ प्रकाश हो जाता है। इसी प्रकार इस चेतन में अहंकार आने से असली नाम स्वरूप इसका ढक जाता है। अहंकार के चले जाने पर असली स्वरूप का प्रकाश होता है। बडों का कहना है कि (सू० श्री० भू०) अहंकारोऽग्निस्पर्शवत्। अहंकार रूप मालिन्य निवर्त्तने आत्मनोऽविनश्य न्नाम दास इति ही।। इसका अर्थ यह हुआ कि रुई, कपड़ा वगैरह में अग्नि का स्पर्श होने से वह भस्म हो जाता है। उसी प्रकार अहंकार के आने से इस आत्मा का स्वरूप नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। शुद्ध स्वरूप जो आत्मा है इसको अहंकार ने ही मलिन कर रखा है। इस अहंकार रूप दोष के निकल जाने पर इस आत्मा का अनादि सिद्ध नाश रहित नाम जो भगवद्दास है, यही रह जाता है। इससे हम मुमुक्षुओं को चाहिए कि इस अहंकार रूप प्रबल शत्रु से सदा बचने की कोशिश करते रहें। जैसे सदाचारी लोग दुराचारियों से अलग रहते हैं, जैसे अनन्य भगवद्भक्त लोग देवतान्तर तथा देवतान्तर में निष्ठावालों से फर्क रहते हैं। जैसे भगवान की कृपा के भरोसे रहने वाले शरणागत लोग इतर उपायान्तर वालों के संग से फर्क रहते हैं। इसी प्रकार सद्गुरु के कृपा पात्र सात्विक सच्चे मुमुक्षुओं को चाहिये कि अहंकार से तथा अहंकारी मनुष्यों से सदा दूर रहें। अहंकारी जीवों के लक्षण क्या है इस बात को संक्षेप से पहले मैं कह चुका हूँ। फिर भी संक्षेप में निवेदन कर रहा हूँ सो आप लोग ध्यान देकर सुनिये। अहंकार का स्वरूप तो अनेक प्रकार का है, जिसको वर्णन करने से वर्त्तमान प्रसंग बहुत बढ़ जायगा। इससे थोड़े ही में समझाता हूँ। मुमुक्षुओं में तो अहंकार रहता ही नहीं है क्योंकि मुमुक्षु उसी को कहते हैं जो संसार बन्धन से छूटने की इच्छा रखता हो और अहंकार जो है सो संसार बन्धन में डालने वाला है। तो इन दोनों बातों से मेल नहीं खाता। जिसमें अहंकार है सो मुमुक्षु नहीं हो सकता है और जो सच्चा मुमुक्षु होगा उसके भीतर स्वप्न में भी अहंकार नहीं होगा क्योंकि गीता में भगवान का श्रीमुख वचन है कि-

"अहंकार विमूढ़ात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते।"

(क्रमशः)

भागवत कथा सागर

महाराजा प्रियव्रत

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

मोबाइल - ९८२१९१४६४२

महाराजा प्रियव्रत की कथा श्रीमद्भागवतम् के पाँचवे स्कन्ध में बताई गई है। वे स्वायंभुव मनु के एक पुत्र थे। नारद मुनि के चरण कमलों में समर्पित अपनी सेवाओं के कारण वे परम पुरुषोत्तम भगवान के सच्चे भक्त बने। उन्होने परम सत्य के ज्ञानार्जन द्वारा जीवन में पूर्णता प्राप्त की थी। प्रियव्रत ने सोचा कि यदि अपने पिता के आदेशानुसार उन्होने संपूर्ण विश्व पर राज्य करना स्वीकार कर लिया तो वे भक्ति के मार्ग से दूर हो जाएंगे। अतः वे तपस्वी जीवन अपनाकर भगवत् प्राप्ति के प्रयासों में लगे रहे। तब स्वयम् ब्रह्मा जी ने राज्य के उत्तरदायित्व के प्रति प्रियव्रत की सोच बदले की जिम्मेदारी ली।

परम शक्तिशाली ब्रह्मा जी अपने साथियों एवं मूर्तिमान वेदों सहित उस स्थान पर आये जहाँ प्रियव्रत तपस्या कर रहे थे। ब्रह्मा जी के आगमन का पता लगते ही प्रियव्रत उनको सम्मान देने के लिए उठकर खडे हो गये। इस जगत के रचयिता ब्रह्मा जी को सम्मान देने के लिए स्वायंभुव मनु और नारद मुनि भी उठकर खडे हो गये। सभी का सम्मान स्वीकार करके ब्रह्मा जी ने प्रियव्रत को एक अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश दिया। उस संदेश को सुनकर प्रियव्रत ब्रह्मा जी की आज्ञा का पालन करने के लिए तैय्यार हो गये।

सांसारिक कार्यों में एवं राजकाज में अनुरक्त रहने पर भी प्रियव्रत अपने पूर्णता के पथ से भ्रमित नहीं हुए। उनका ध्यान निरन्तर परम पुरुषोत्तम भगवान के चरण कमलों में लगा रहता था। वास्तव में अपने बडों का मान रखने के लिए ही उन्होने इस जगत पर शासन करने का राज्यभार संभाला था। बाद में उनका विवाह विश्वकर्मा

की पुत्री बर्हिष्मती से हुआ जिससे उन्हे दस पुत्र प्राप्त हुए जो सुन्दरता, चरित्र एवं उदारता में प्रियव्रत के ही समान थे। उनकी एक सुन्दर पुत्री भी थी जिसका नाम उर्जस्वती था। उनके दस पुत्रों के नाम आग्नीध्र, इध्मजिह्व, यज्ञबाहु, महावीर, हिरण्यरेता, घृतपृष्ठ, सवन, मेघातिथि, वीतिहोत्र तथा कवि थे। उन दस पुत्रों में से कवि, महावीर एवं सवन पूर्ण ब्रह्मचारी रहे। अंत में उन्होने परमहंस आश्रम को अपनाया। वे अपनी इन्द्रियों को पूर्णतया वश में रखते हुए परम साधु हो गये। उन्होने अपने मनों को पूर्णतया भगवान वासुदेव के चरण कमलों पर केन्द्रित रखा।

महाराजा प्रियव्रत की दूसरी पत्नी ने तीन अद्भुत पुत्रों को जन्म दिया जिनके नाम उत्तम, तामस और रैवत थे। वे सभी बाद में विभिन्न मन्वन्तरों के मनु बने। अपनी अतुलनीय शक्ति के साथ महाराजा प्रियव्रत ने ग्यारह अर्बूद वर्षों तक इस पृथ्वी पर राज्य किया। एक अर्बूद दस करोड वर्षों के तुल्य होता है। वे अपने सभी शत्रुओं के लिए भय

का स्वरूप थे। सभी शत्रु प्रियव्रत के धनुष-बाण उठाते ही भाग जाते थे। वास्तव में प्रियव्रत की वीरता बहुत महान थी। एक बार वे सूर्य की परिक्रमा से असन्तुष्ट हो गये। सूर्यदेव सुमेरु पर्वत की परिक्रमा करते हुए समस्त लोकों को प्रकाशित करते हैं। किन्तु जब वे उत्तर में जाते तो दक्षिण में अंधकार हो जाता और जब दक्षिण में जाते तो उत्तर में अंधकार हो जाता है। महाराजा प्रियव्रत को यह स्थिति नहीं भाई। उन्होने संकल्प किया कि वे एक सूर्य की भाँति प्रकाशमान सुनहरे रथ पर चढकर सूर्य की कक्षा का पीछा करके अंधेरे वाले भागों को प्रकाशित करेंगे। इस प्रकार प्रियव्रत की दिव्य शक्ति के कारण सभी लोक चमक गये और उन पर थोडा भी अंधकार नहीं बचा। भगवान के प्रति अपनी प्रगाढ भक्ति के कारण ही महाराजा प्रियव्रत ऐसा कर सके। जब प्रियव्रत ने अपना रथ सूर्य के पीछे हाँका तब रथ के पहियों से सात समुद्र बन गये और भूमण्डल सात द्वीपों में विभाजित हो गया।

महाराजा प्रियव्रत के रथ से बने सात द्वीपों के नाम जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कश, क्रौंच, शाक तथा पुष्कर हैं। प्रत्येक द्वीप अपने से पहले वाले द्वीप से आकार में दुगुना बडा है और खारे पानी से नहीं अपितु तरह-तरह के द्रवों से घिरा है। वास्तव में सातों समुद्र क्रमशः खारे जल, ईख के रस, सुरा, घृत, दुग्ध, मट्ठा तथा मीठे पेय जल से पूर्ण हैं। प्रत्येक समुद्र की चौडाई द्वीप की चौडाई के बराबर है। महाराजा प्रियव्रत ने वे सभी द्वीप अपने सात पुत्रों को दे दिये। वे सभी उन सात द्वीपों के शासक बने। बाद में प्रियव्रत की पुत्री का विवाह शुक्राचार्य से हुआ और उनकी देवयानी नामक पुत्री का जन्म हुआ।

इस प्रकार महाराजा प्रियव्रत ने अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से संपूर्ण पृथ्वी पर राज्य किया और अंत में वन जाने से पहले कार्यभार अपने पुत्रों को सौंप दिया। वन में रहकर वे परम पुरुषोत्तम भगवान पर ध्यान लगाते हुए अतंतः आध्यात्मिक जगत के अंतिम गन्तव्य स्थल पर पहुँच गये।

❁

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

संसार के वैद्य भगवान धन्वंतरि

श्री धन्वंतरि जयंती के संदर्भ में (२४.११.२०१९)

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया
मोबाइल - ९८२५११३६३६

ॐ नमो भगवते धन्वंतरये अमृत कलश हस्ताय सर्व आमय।
विनाशनाय त्रिलोक नाथाय श्री महाविष्णवे नमः।।

अर्थात - परम भगवान को जिन्हे सुदर्शन वासुदेव धन्वंतरि कहते है, जो अमृत कलश लिये है, सर्वभय नाशक है, सर्वरोग नाश करते है, तीनों लोकों के स्वामी है और उनका निर्वाह करनेवाले है, उन विष्णु स्वरूप धन्वंतरि को नमन है।

धन्वंतरि को देवताओं के वैद्य माने जाते है। धन्वंतरि हिन्दु धर्म में क्षत्रिय नाई (सेन, निवास आदि नाम से प्रचलित कूल) कूल के है। वे महान चिकित्सक थे। उन्होंने देव पद प्राप्त हुआ था। हिन्दु धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वे भगवान विष्णु के अवतार समझे जाते है। धन्वंतरि का पृथ्वी लोक पर अवतरण समुद्र मंथन के समय हुआ था। शरद पूर्णिमा को चंद्रमा, अश्विन कृष्ण द्वादशी को कामधेनु गाय, त्रयोदशी को धन्वंतरि, चतुर्दशी को कालीमाता और अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी का समुद्र में से प्रादुर्भाव हुआ था।

धन्वंतरि भगवान विष्णु का साक्षात स्वरूप है। वे चतुर्भुज है। ऊपर की दोनों भुजाओं में शंख और चक्र धारण किये है। जब की अन्य दो भुजाओं में से एक में जलुका और औषध तथा दूसरे में अमृत कलश लिये हुये है। धन्वंतरि की प्रिय धातु पित्तल मानी जाती है। इसलिये धनतेरस (धनत्रयोदशी) के दिन पित्तल आदि के बर्तन खरीद करने की परंपरा है। धन्वंतरि के वंश में दिवोदास हुए। जिन्होंने 'शल्य चिकित्सा' विश्व का पहला विद्यालय काशी में स्थापित किया, जिसके प्रधानाचार्य सुश्रुत बने थे।

सुश्रुत दिवोदास के शिष्य और ऋषि विश्वामित्र के पुत्र थे। उन्होंने 'सुश्रुत संहिता' लिखी थी। सुश्रुत विश्व के पहले सर्जन थे। इसलिये इस अवसर पर (त्रयोदशी के दिन) भगवान धन्वंतरि की पूजा करते है। कहते है कि शिवजी ने विज्ञापन किया, धन्वंतरि ने अमृत प्रदान किया और इस प्रकार काशीनगरी 'कालजयीनगरी' बन गयी।

धन्वंतरि महिमा

वैदिक काल में जो महत्व और स्थान अश्विनी को प्राप्त हुआ था, वही पौराणिक काल में धन्वंतरि को प्राप्त हुआ। जहाँ अश्विनी के हाथ में मधुकलश था, वहाँ धन्वंतरि के हाथ में अमृत कलश है, क्योंकी श्रीहरि विष्णु संसार की रक्षा करते है, अतः रोगों से रक्षा करनेवाले धन्वंतरि को विष्णु का अंश माना गया। विषविद्या के संबंध में कश्यप और तक्षक का जो संवाद महाभारत में आता है, वैसा ही धन्वंतरि और नागदेवी मनसा का संवाद ब्रह्मवैवर्त पुराण में है।

ऐसे ही भगवान धन्वंतरि के प्रादुर्भाव की कथा रसमय है, इस लेख में अभी हम जन्मवृत्तांत का अनुसंधान करेंगे।

धन्वंतरि प्रादुर्भाव की कथा

धन्वंतरि के प्रादुर्भाव की दो कथायें मिलती है, ज्यादातर धन्वंतरि के जन्म के विषय में समुद्र मंथन की कथा अति प्रचलित है।

देव और असुर ने मिलके समुद्र का मंथन किया इन में से चौदह रत्न निकला, चौदह रत्नों में साक्षात श्रीहरि विष्णु भगवान धन्वंतरि के रूप में त्रयोदशी के दिन अमृत कलश और औषध ले के प्राप्त हुए।

दूसरी कथा के अनुसार एक ऋषि वन में विशेष प्रकार के कुश (घास) ढूंढ़ने निकला उसे बहुत प्यास लगी, जंगल में बाहर आने पर उन्हे वैश्य जाति की वीरभद्रा नामक युवती से पानी पीया, ऋषि बहुत संतुष्ट हुआ और आशिर्वाद दिया भगवान तुम्हे ऐसा पुत्र देंगे, जिस के ज्ञान प्रकाश से समस्त संसार प्रकाशमान होगा। युवती ये आशिर्वाद से चिंतित हुई, क्योंकी वे कुँवारी थी। गलवान ऋषि युवति को अपने आश्रम में ले गया और विरभद्रा की गोद में घास का पूतला बनाकर डाल दिया और धन्वंतरि का स्मरण कर मंत्र पढने लगे, कुछ समय बाद घास का पूतला ने बालक का रूप धारण किया, ये बालक ही धन्वंतरि का साक्षात स्वरूप है।

परम्परा की स्थापना

जिस तरह पितामह ब्रह्म ने दक्ष प्रजापति को, भगवान शंकर ने शुक्राचार्य को आयुर्वेद पढाकर परम्परा की स्थापना की थी, उसी प्रकार भगवान श्री विष्णु ने गरुडजी को आयुर्वेद पढ़ाकर परम्परा चलायी।

गरुड ने धन्वंतरि को आयुर्वेद पढाया, इस तरह आयुर्वेद स्वरूप भगवान विष्णु ने आवश्यकता पड़ने पर आयुर्वेद से प्राणियों को सुखी-सम्पन्न बनाया।

औषध का प्रयोग फिर जनता के महान् पालक अश्विनीकुमारों के हाथ में आ गया। बहुत काल बाद मनुष्य लोक में जब रोगों ने अपने पाँव फैलाये और पृथ्वी के प्राणी फिर दीन-दुःखी होने लगे, तब भगवान नारायण श्री विष्णु ने अंशांशरूप में जो अपना अवतार धन्वंतरि रूप में लिया था, उस धन्वंतरि रूप से राजा धन्व के यहाँ पुत्र रूप में आविर्भूत हुए, क्योंकि राजा धन्व ने इन्ही अब्ज धन्वंतरि को पुत्र रूप से पाने के लिए तप किया था। गर्भावस्था में ही इन्हें अणिमा आदि सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी थी। विष्णु के अंशांशरूप में अवतीर्ण भगवान धन्वंतरि ने आयुर्वेद को आठ अंगों में बाँट दिया। वे आठ अंग इस प्रकार है - कायचिकित्सा, बालचिकित्सा, ग्रहचिकित्सा, ऊर्ध्वाङ्गचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, दंष्ट्रचिकित्सा, जराचिकित्सा और वृषचिकित्सा।

धन्वंतरि का जप मंत्र

इस संसार में मानव को शरीर की रक्षा के लिए हमारे आरोग्य की रक्षा के लिये धन्वंतरि का जप और उपासना करनी चाहिए।

धन्वंतरि साधना का साधारण मंत्र

ॐ धन्वंतरेय नमः।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय वासुदेवाय धन्वंतराये
अमृतकलश हस्ताय सर्वभय विनाशाय
सर्वरोगनिवारणाय त्रिलोकपथाय त्रिलोकनाथाय
श्री महाविष्णुस्वरूप श्री धन्वंतरि स्वरूप
श्री श्री श्री अष्टचक्र नारायणाय नमः।।

दुनिया का तमाम चिकित्सक श्री धन्वंतरि की उपासना करते है। तो आइये, धन्वंतरि जयंती के अवसर पर हमारी स्वास्थ्य के लिए, परिवार की, राज्य की, विश्व की स्वस्थता के लिए उस मंत्र से हम सब भगवान धन्वंतरि को नमन करते है।

धन्वंतरि की नित्य पूजा-आराधना दक्षिण भारत के मंदिरों में

दक्षिण भारत के श्रीरंगम् मंदिर के बाहरी भाग में धन्वंतरि भगवान की नित्य पूजा होती है और दर्शनार्थी को नित्य हर्बल तीर्थ और प्रसाद बाँटे जाते है। कांचीपुरम् वरदराज मंदिर में, पांडीचेरी में सभी जगह धन्वंतरि मूर्ति की नित्य पूजा आराधना होती है।

साक्षात् धन्वंतरि स्वरूप श्रीहरि विष्णु के चरणों को कोटि कोटि वंदन...

जय श्रीमन्नारायण...

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक संपन्न

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी के वार्षिक ब्रह्मोत्सओं की विविध वाहन सेवाएँ, कलाप्रदर्शकों के दृश्य

उभयदेवेरियों के साथ श्रीपति और उनके आगे गरुडध्वज का तिरुमल माडावीथियों में शोभायात्रा का निर्वहण

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ध्वजस्तंभ के ऊपर गरुडध्वज को फहराना

आँध्रप्रदेश राज्य सरकार की ओर से मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगन मोहन रेड्डी जी के द्वारा स्वामी को रेशमी वस्त्रों का समर्पण

महाशेषवाहन सेवा में भागलेते हुए आँध्रप्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगन मोहन रेड्डी जी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक संपन्न

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी के वार्षिक ब्रह्मोत्सव की विविध वाहन सेवाओं के दृश्य

महाशेषवाहन पर श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी

लघुशेषवाहन पर श्रीपति और वाहन सेवा के सामने जीयर स्वामीजी, अध्यापकों का दिव्यप्रबंध पारायण

हंसवाहन पर श्रीपति

सिंहवाहन पर श्रीहरि

मोतीवितानवाहन पर श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी

कल्पवृक्षवाहन पर श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी

सर्वभूपालवाहन पर श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी

जगन्मोहन अलंकार में श्रीपति

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक संपन्न

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी के वार्षिक ब्रह्मोत्सव की विविध वाहन सेवाओं के दृश्य

गरुडवाहन पर श्री मलयप्पस्वामी

हनुमंतवाहन पर श्रीपति

गजवाहन पर श्रीहरि

सूर्यप्रभावाहन पर श्रीनिवास

चंद्रप्रभावाहन पर श्रीपति

स्वर्णरथोत्सव में श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी

अश्ववाहन पर श्रीहरि

श्रीदेवी, भूदेवी समेत श्रीपति के समक्ष संपन्न चक्रतीर्थोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक संपन्न

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी के वार्षिक ब्रह्मोत्सव के दृश्य

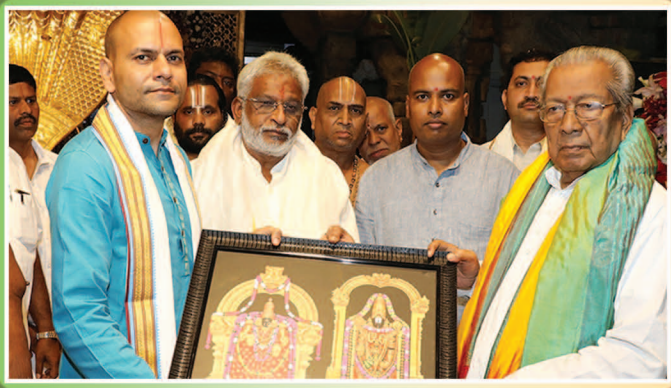

भगवानजी के दर्शनानंतर आँध्रप्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री विश्वभूषण हरिचंदन जी को श्रीपति के तीर्थप्रसाद व चित्रपट को भेंट करतेहुए ति.ति.दे.न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी जी और ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस.,

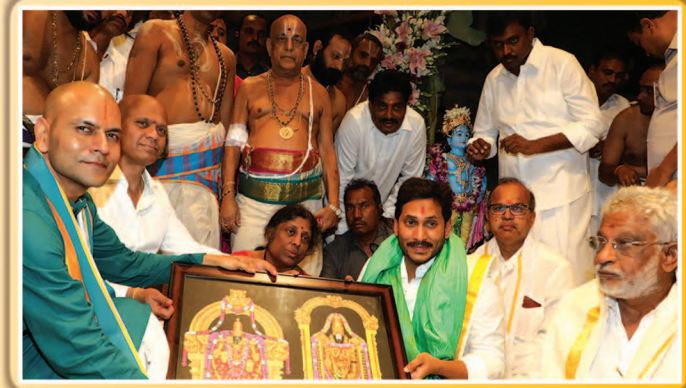

आँध्रप्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगन मोहन रेड्डी जी को श्रीहरि के तीर्थप्रसाद व चित्रपट का ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., और अन्य उच्चपदाधिकारियों के द्वारा भेंट देना

ऊँजल सेवा

स्नपनतिरुमंजन

कलावृन्द

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

मण्मिशै योनिहळ्तोरुम् पिरन्दु, एंगळ् माधवने
कण्णुर निर्क्किलुम् काणहिल्ला, उलहोर्ह ळेल्लाम
अण्ण लिरामानुजन् वन्दु तोन्निय वप्पोळुदे
नण्णरु ज्ञानम् तलैक्कोण्डु, नारण र्क्कायिनरे ॥४१॥

पिता पुत्रेण पितृमान् योनियोनावित्याम्नातरीत्या अस्मत्स्वामी श्रियः - पतिर्नारायणो नानायोनिषु जायमानो यद्यपि सकल मनुजनयन विषयतामयते, तथाऽपि। परं भवामजानन्तः अवजानन्ति मां मूढाः। इति गीतोक्तरीत्या तमवजानन्त्येव सर्वेऽपि भौमाः। तेऽपि हि धूर्ताः संसारिणोऽस्मत्स्वामिनो रामानुजस्य अवतारसमसमय एव दुर्लभज्ञान भूमभूषित मनसस्सन्तो भगवन्नारायण शेषभावमन्वविन्दन्त हन्त। (भगवदवतारतोऽपि रामानुजावतार एव श्रेयानिति, न केवलमस्मादृशामपि तु भगवतोऽपि लाभकर इति च कथितं भवति।।)

हमारे स्वामी लक्ष्मीपति श्रीमन्नारायण ही इस भूतल पर नानायोनियों में एकैक में भी अवतार लेकर सबके नयनगोचर होकर विराजमान हुए थे। तो भी इस भूमंडलनिवासी लोग उनको अपने नाथ नहीं समझ सके। ऐसे रहनेवाले, ये लोग, सर्वस्वामी श्रीरामानुज स्वामीजी के यहां पर अवतार लेने के बाद ही दुर्लभ ज्ञान प्राप्त कर श्रीमन्नारायण के शेष बन गये। (विवरण-स्वयं जन्मादि दोष रहित भगवान ने भी धूर्त संसारियों को सुधारने की इच्छा से इस भूमि पर रहनेवाली एकैक योनि में भी जन्म लिया (अवतार लिया)। परंतु ये मूर्ख लोग उनकी यह महिमा न जानते हुए उनका तिरस्कार ही करने लगे; दूर रह गयी उनके भक्त होने की बात। इस प्रकार अनेक अवतारों में असफल होने पर उन्होंने ''अवजानन्ति मां मूढाः'' इत्यादि कहते हुए अपने अवतार बंद कर दिये। फिर श्रीरामानुज स्वामीजी का अवतार हुआ, जिसके होते ही भगवान का भी तिरस्कार करनेवाले वे ही धूर्त संसारी जन ज्ञानी बन कर उन्हीं भगवान के भक्त बन गये। अतः भगवदवतार से भी श्री स्वामीजी का अवतार ही श्रेष्ठतर है।)

भगवान का भी तिरस्कार करनेवाले संसारी जन श्रीरामानुज स्वामीजी के अवतार के बाद ज्ञानी बनकर उन्हीं भगवान के भक्त बन गये।

क्रमशः

युवता

भगवद्गीता और नौजवान

मन नियंत्रण मार्ग

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

मोबाइल - ९८२१९१४६४२

एक बच्चे से बूढ़े तक सभी व्यक्ति ''अनियंत्रित मन'' से ग्रसित हैं। सभी लोग मन से उत्पन्न कठिनाईयों के बारे में चिंतित हैं। आजकल मन के विकार चरम सीमा पर पहुँच रहे हैं। इन विकारों का ही नया नाम ''मानसिक तनाव'' है। पहले जिसे चिंता कहते थे वही अब मानसिक तनाव कहलाता है। विद्यार्थियों को परीक्षा या इण्टरव्यू एवं खेल-कूद प्रतिस्पर्धाओं के समय इस मानसिक तनाव का अनुभव होता है। वास्तव में यह मानसिक तनाव कोई नई चीज नहीं है। भगवद्गीता में हमें भगवान कृष्ण एवं अर्जुन के मध्य हुआ दिव्य संवाद मिलता है। उस संवाद में एक बार अर्जुन ने मन नियंत्रण में अपनी असफलता की तुलना वायु को नियंत्रित करने जैसे कठिन कार्य से की है। वायु को नियंत्रित कर पाना प्रायः असम्भव है। इसी प्रकार किसी सामान्य व्यक्ति के लिए मन को नियंत्रित कर पाना असम्भव है। तब भगवान श्रीकृष्ण ने मन को नियंत्रित करने का निम्नलिखित उत्तम मार्ग बताया :

''भगवान श्रीकृष्ण ने कहा - हे कुन्तीपुत्र! निस्संदेह चंचल मन को वश में करना अत्यंत कठिन है, किन्तु उपयुक्त अभ्यास द्वारा तथा विरक्ति द्वारा एसा सम्भव है।''

भगवान ने स्वयम् स्वीकार किया कि मन अत्यंत चंचल है। वास्तव में यह सभी लोगों का अनुभव है। मन पल भर के लिए भी स्थिर नहीं होता है। मन का वास्तविक अर्थ क्या है? यह कुछ अन्य नहीं बल्कि विचारों की एक श्रृंखला है। भूतकाल की घटनाएं, वर्तमान के कार्य-कलाप एवं भविष्य में होने वाली घटनाओं से निर्मित विचार मन को परिभाषित करते हैं। मन प्रायः वर्तमान को भूलकर बीती हुई घटनाओं के बारे में चिंतित एवं भविष्य में आने वाली घटनाओं की कल्पना में लगा रहता है। अर्थात मन एक बन्दर की भाँति विभिन्न विचारों की ओर कूदता रहता है। किसी का प्रश्न हो सकता है कि भूतकाल की घटनाओं के बारे में सोचने एवं भविष्य में आने वाली परिस्थितियों की कल्पना करने में क्या हानि है? लेकिन एसा प्रश्न निरर्थक है क्योंकि सदैव बुरे अनुभवों का स्मरण करने से नकारात्मक ऊर्जा एवं निराशा उत्पन्न होती है। भविष्य में आने वाली आपदाओं की कल्पना करने से चिंताऐं उत्पन्न होती हैं। मन के इच्छानुसार भटकने से नकारात्मक ऊर्जा एवं चिंताओं का उत्पन्न होना एक निरर्थक प्रक्रिया है। इससे उत्साह, प्रेरणा एवं सकारात्मक ऊर्जा का ह्रास होता है। अतः एक सच्चे व्यक्ति को निश्चित रूप से अपने मन को नियंत्रित करने का प्रयत्न करना चाहिए। यद्धपि यह सरल नहीं है किन्तु विरक्ति एवं सच्चे अभ्यास के द्वारा इसे प्राप्त किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों के अनुसार विद्यार्थियों एवं युवाओं को कौन सा मार्ग अपनाना चाहिए? उन्हे क्या त्यागने का प्रयत्न करना चाहिए? अपने लक्ष्यों को निर्धारित करना एवं उन्हे निश्चित रूप से प्राप्त करने के विश्वासपूर्ण शब्दों को बोलने की पुनरावृत्ति ही सभी युवाओं एवं विद्यार्थियों के लिए अनुसरण करने योग्य सुनहरा मार्ग है। किसी लक्ष्य के बिना एक व्यक्ति समय व्यर्थ ही व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति अपना समय प्रजल्प करने, टेलीविजन देखने या सोशल-मीडिया आदि की क्रियाओं में लगाता है। जबकि महान कार्यों में अग्रसर होने वाला व्यक्ति सदैव व्यस्त रहता है। वह समय के एक पल का भी दुरुपयोग नहीं करता है। एक उदास व्यक्ति सदैव उदासीनता की बातें करता है, लेकिन उसे एसा नहीं करना चाहिए क्योंकि उदासीनता की बातें करने से उसकी उदासी और अधिक बढ़ जाती है।

मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक एवं वार्षिक लक्ष्य निर्धारित होने पर एक व्यक्ति पूर्णतया व्यस्त हो जाता है। यह पद्धति अत्यंत महत्वपूर्ण है। फिर ''विरक्ति'' क्या है? विरक्ति का अर्थ है उन सभी चीजों को छोडना जो हमारे लक्ष्यों से संबन्धित नहीं हैं। एसी विरक्ति से अच्छे कार्यों को करने के लिए अधिक समय उपलब्ध हो जाता है। एक अध्ययन से पता चला कि वर्तमान युवा प्रतिदिन ३-४ घंटे सोशल-मीडिया की क्रियाओं में लगा देते हैं। विरक्ति से वह समय बच सकता है। अतः लक्ष्यों को निर्धारित करने, सदैव सकारात्मक अभिवचनों को बोलने एवं लक्ष्यों से असम्बन्धित चीजों से विरक्त होने पर सभी विद्यार्थी मानसिक तनाव से मुक्त होकर अपने इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं। मानसिक तनाव से मुक्ति का अर्थ है पूर्ण शांति, जिससे सभी कार्यों में विजय निश्चित रूप से प्राप्त होती है। निरंतर विजय प्राप्त करने वाले व्यक्ति सदैव स्वस्थ, आनंदित एवं समृद्धिशाली रह सकते हैं।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामि पुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री प्रपन्नामृतम्

(६वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

(गतांक से)

सहस्त्रगीति का अध्ययन करते समय श्रीयामुनाचार्यजी को श्रीरामानुजाचार्य का ध्यान आना

श्रीरामानुजाचार्य वरदराज भगवान की सेवा अनन्य भावना से करते हुए कांचीपुरी में निवास करने लगे। एक समय श्रीरंगमन्दिर के पंचसंस्कार सम्पन्न, परवादि भयंकर भगवत्सिंहासन के अवतार, सौशील्यादि गुण सम्पन्न, वेदान्ताध्ययनशील, पुष्कल शिष्यसम्पत्ति सम्पन्न, शरणागत रक्षक, श्रीवैष्णवसिद्धान्त के संस्थापक एवं विद्वद्वृन्द परिसेवित यतीन्द्र श्रीयामुनाचार्यजी श्रीशठकोपसूरि रचित सहस्त्रगीति का अध्ययन करते समय अपने शिष्यों को बुलाकर आदेश दिया- ''आप लोग समदमादि षड्गुणोपेत भगवद् भक्त, प्रियंवद, सकल शास्त्र तत्वज्ञ, सदाचारनिष्ठ तथा सज्जनवृन्द परिपूजित लड़के का पता लगाकर हमें सूचित करें।'' श्रीयामुनाचार्य की आज्ञा से सम्पूर्ण क्षेत्र में भ्रमण करते हुए उनके शिष्यों ने कांचीपुरी में आकर श्रीरामानुजाचार्य को देखकर तथा उनके विषय में यादवप्रकाशाचार्य वाली कथा सुन, जाकर भगवान यामुनाचार्य को उनके विषय में बतलाया। शिष्यों द्वारा श्रीरामानुजाचार्य के विषय में सुनकर उन्हे देखना चाहकर भी श्रीयामुनाचार्य उस समय रोगग्रस्त होने के कारण कांचीपुरी नहीं जा सके।

उधर यादवप्रकाशाचार्य ने भी प्रयाग जाकर वहाँ पुण्यवती गंगा में स्नान करके वहीं कुछ काल तक शिष्यों के साथ निवास किया। एक दिन गंगा में स्नान करते समय श्रीगोविन्दाचार्यजी की अंजलि में शिवलिंग का प्रादुर्भाव हुआ। इसे देखकर आश्चर्य चकित गोविन्दाचार्यजी ने यादवप्रकाशाचार्य को दिखाया। गोविन्दाचार्य के बायें हाथ में उत्पन्न शिवलिंग को देखकर यादवप्रकाशाचार्य बोले- ''गंगास्नान से प्रसन्न भूतभावन भगवान रुद्र उत्पन्न हुए हैं।'' गोविन्दाचार्य को इस तरह कहकर यादवप्रकाशाचार्य शिष्यों सहित विभिन्न तीर्थों में स्नान करते हुए माघ मास तक प्रयाग निवास करके कांचीपुरी लौट आये। कांची आकर गोविन्दाचार्य भी यादवप्रकाशाचार्य से आज्ञा लेकर मंगल ग्राम आकर, गंगा से प्राप्त शिवलिंग की ''काल-हस्तिपुर'' में स्थापना करके शिवोपासना में रत रहने लगे।

कांची-वासियों से श्रीरामानुजाचार्य से सम्बद्ध अपना अपवाद सुनकर यादवप्रकाशाचार्य ने सोचा कि-रामानुज से बैर करने में अपनी हानि ही है। अतः उन्होंने शिष्यों से रामानुजाचार्य को बुलवाकर शिष्याचार्य का पुराना सम्बन्ध अपना मनोभाव व्यक्त करके प्राप्त कर लिया। श्रीरामानुजाचार्य भी यादव व्यतिरिक्त शास्त्र-ज्ञान प्रदाता का अभाव सोचकर भगवान वरदराज की आराधना त्यागकर पहले की तरह यादवप्रकाशाचार्य के यहाँ शास्त्राभ्यास करने लगे।

॥ श्रीप्रपन्नामृत का ६वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥

क्रमशः

(गतांक से)

बालाजी श्रीवेंकटेश भगवान की सेवा में महन्त

- डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु
मोबाइल - ९६४०२३३९३०

इनमें जिन जिन बहुमूल्यवान मनियों, हीरों को रखा गया था वे सभी महारानी मूप्पनार से समर्पित किये गये। धर्मदासजी की न्यासिता में बनायी गयी बहुमूल्य वस्तुएँ निम्नवत् हैः-

१. दोनों तरफ बनाये गये गन्धर्व-चित्र वाला स्वर्णिम मकर तोरण, २. रजत आभरण वाला सूर्यप्रभावाहन, ३. दो गरुडवाहन (एक बड़ा-एक छोटा), ४. हनुमद्वाहन, ५. अश्ववाहन, ६. कल्पवृक्षवाहन (इन सभी पर चाँदी का आभरण है)

इस महन्त के मन में सदा यात्रियों को सुविधायें प्रदान करने का विचार रहता था। इन्होंने सहस्त्र खंभोंवाले मंडप की मरम्मत करवाकर उसमें यात्रियों के रहने की भी व्यवस्था की थी। इसी प्रकार भगवान के मन्दिर के दो गोपुरों, अहाते का थोड़ा-सा भाग एवं कुछ मंडपों की मरम्मत करवायी। कहा जाता है कि कल्याण मंडप की यागशाला की मरम्मत करते समय उन्हें वहाँ दो मुहरबंद सोने के सिक्कोंवाले बरतन मिले जो राजा वेंकटपति राय एवं ओढ्रगजपति से सम्बन्धित थे। तत्कालीन मूल्य के अनुसार इन सिक्कों का मूल्य दो लाख रूपयों का था। यह ज्ञात हुआ कि सरकार ने इसे भूमिगत निधि (खज़ाना) समझकर जिलान्यायालय में सुरक्षित रखा था। यह भी पता चलता है कि तदुपरान्त इन सोने के सिक्कों का लाकर देवस्थान के कोशागार में सुरक्षित रखा गया।

महन्त धर्मदासजी ने तिरुपति एवं तिरुचानूर मन्दिरों की निम्नलिखित सेवायें की थीः-

१. भगवान श्री गोविंदराजस्वामी मन्दिर के पवित्र गर्भगृह की मरम्मत एवं भगवान का जटा बंधन।

२. भगवान श्री गोविंदराजस्वामी एवं उनकी पटरानियों के स्वर्ण आभूषण व स्वर्ण मुकुट।

३. शालानांचारु मन्दिर के भीतर स्थित धान्य-कक्ष हटाकर वहाँ से प्रहरी कक्ष व भाष्यकार मन्दिर तक मंडप निर्माण।

४. भक्त कूरत्ताळ्वान के लिए एक नवमंडप निर्माण।

५. मन्दिर की उत्तर दिशा में बने उपवन में वाहन रखने हेतु एक विशाल कमरा।

६. छोटे एवं बड़े दो प्रकार के शेष, गरुड़, हनुमान एवं हंस वाहनों की व्यवस्था।

७. जनवरी माह में भक्त आण्डाल सहित भगवान बालाजी की शोभायात्रा के लिए आवश्यक ''भोगि-रथ'' की तैयारी।

८. श्री कोदण्डरामस्वामी मन्दिर में स्थित सीताराम व लक्ष्मण की मूर्तियों के लिए 'जटा बंधन' एवं 'ध्वजस्तम्भ' की व्यवस्था। मूलविराट मूर्तियों के लिए रजत कवच एवं स्वर्णलेपित मुकुट निर्माण साथ-साथ धनुष-बाणों पर रजत लेपन।

९. मन्दिर परिसर में प्रहरी कक्षा के द्वार-बंध के पीछे तथा रथ के निकट एक-एक मण्डप का निर्माण।

१०. आळ्वार (कपिल) तीर्थ में दोनों तरफवाले मंडपों की मरम्मत। कपिलेश्वरस्वामी मन्दिर से सम्बन्धित खण्ड़हर बने भागों का पुनरुद्धार।

११. तिरुचानूर की भगवती पद्मावती मैया के मन्दिर के गोपुर व परकोटे का निर्माण।

१२. पद्मसरोवर (पुष्करिणी) को खुदवाकर, शुक्रवारोद्यान में मंडप बनवाने के साथ-साथ एक कुएँ की भी व्यवस्था की।

१३. मन्दिर में जटा बंधन, माताजी पद्मावती के मणिखचित मुकुट एवं अन्य छोटे-मोटे आभूषण, हाथों के स्वर्ण आभरण, हाथों में स्वर्णिम कमल इत्यादि की व्यवस्था।

१४. नवीन रथ, रसोई कक्ष एवं उसके पश्चिम की दिशा में कुछ कक्षों का निर्माण।

१५. मन्दिर में वाहनमण्डप एवं पुष्करिणी के समक्ष भगवान सूर्यनारायण स्वामी मन्दिर निर्माण सहित मूर्ति का शिलान्यास।

उपरोक्त सेवाएँ करके महन्त धर्मदास कृतार्थ हो गये। तिरुमल, तिरुपति व तिरुचानूर के इतिहास में वे अमर हो गये। इसी कारण इनका नाम भी बड़े आदर से लिया जाता है।

३. महन्त भगवानदास

महन्त भगवानदासजी का कार्य-काल सन् १८८० ई. से प्रारम्भ हुआ। ये महन्त धर्मदासजी के शिष्य थे। तिरुपति कार्यालय से तिरुमल मन्दिर को फोन की व्यवस्था कराने का श्रेय इनको ही मिलता है। उस समय यह एक उल्लेखनीय विषय रहा। पदभार संभालने के बाद मन्दिर में ध्वजस्तम्भ का निर्माण, कुछ मण्डपों की मरम्मतें एवं भगवान के लिए कुछ विशेष आभूषण बनवाना इत्यादि इन्होंने करवाये। तिरु (पवित्र) वीथियों (मार्गों) में पेयजल हेतु नल लगवाये। स्वामि पुष्करिणी की तरफ अधिकारियों के ठहरने की व्यवस्था, तिरुपति-पुष्पोद्यान में कुछ कमरे बनवाये, उच्च विद्यालय-निर्माण, संस्कृत विद्यालय की स्थापना इत्यादि इस महन्त द्वारा किये गये कुछ महान व अविस्मरणीय कार्य थे। तिरुपति में श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण कार्य भी इन्होंने ही प्रारम्भ किया था। इसके अतिरिक्त श्रीकालहस्ती व कार्वेटिनगर के जमींदारों को कुछ लाखों रूपये उधार में दे दिये। यह भी पता चलता है कि धर्मदासजी ने भी इनके पूर्व कुछ धन इन जमींदारों को उधार में दिये थे।

श्री कोदण्डरामालय, तिरुपति में स्थित उत्सवमूर्ति (चल-मूर्ति) के लिए इन्होंने स्वर्ण लेपित मकर तोरण, दो कंधों के आभूषण, एक रत्नजड़ित उदर बंध, कंठमाला, दो रत्न हार, रत्नों से जड़ी माँग-आभूषण (राकिड़ी) इत्यादि करवाये। तिरुपति-तिरुचानूर मंदिरों की उत्सवमूर्तियों के लिए स्वर्णहार बनवाकर सम्बंधित खज़ानों में सुरक्षित रखाये थे। तिरुपति मन्दिर के लिए रजत आभरणवाला एक सूर्यप्रभावाहन तथा सर्वभूपालवाहन बनवाये। तिरुचानूर भगवती पद्मावती मन्दिर ध्वजस्तम्भ के चारों ओर मण्ड़प बनवाये। इस मन्दिर में इन्होंने सुन्दरराजस्वामी केलिए एक छोटा मन्दिर निर्मित करवाया था। माताजी मन्दिर से जुड़े नीराली मण्डप बनवाकर उस मण्डप-विमान पर स्वर्णकलश स्थापित कराया था। इनके अलावा धर्मदासजी ने प्लवोत्सव (नौका विहार) भी प्रारम्भ करवाया था।

४. महन्त महाबीरदास

इस महन्तजी ने १८९० ई. से १८९४ ई. तक पदभार संभाला था। इनके कार्यकाल में कोई उल्लेखनीय कार्य व सेवा नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मन्दिर सम्बंधी समस्त सेवायें व कार्यक्रम यथावत् आयोजित किये गये थे। ये महन्त भगवान के शिष्य थे।

५. महन्त रामकिशोरदास

महन्त रामकिशोरदासजी ने सन् १८९५ ई. में मन्दिर के कार्यकारी अधिकारी पद स्वीकृत किया था। इनके कार्यकाल में भी एकाध आभूषण बनवाने के कार्य के

अलावा कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं था। इन्होंने तिरुमल भगवान बालाजी की उत्सवमूर्ति को वज्र जड़ित शंख व चक्र, हस्त-आभरण एवं वज्र विभूषित कमरबंध बनवाये थे। तिरुपति मन्दिर में स्थित गोदा माता के लिए नूपुर बनवाये थे। इनके पश्चात् इनके तीनों शिष्यों में से एक प्रयागदासजी ने सन् १९०० ई. में मन्दिर निर्वाह का दायित्व ले लिया।

६. महन्त प्रयागदास

पदभार सम्भालने के बाद इन्होंने स्वामि पुष्करिणी में स्थित नीरालि मण्ड़प का पुनःनवीकरण किया, भगवान वराहस्वामी मंदिर का पुनरुद्धार करके भगवान बालाजी के मन्दिर के भीतर पहले से ही स्थित शीशामण्डप में बारह वर्षों से विद्यमान श्री वराहस्वामी की मूर्ति का पुनःप्रतिष्ठापित करवाया था। भगवान बालाजी के मन्दिर के भीतरवाली ''सम्पंगी (चमेली)'' परिक्रमा-मार्ग की मरम्मत करवाने के साथ-साथ एक नूतन रथ बनवाया था। कुछ मन्दिर गोपुरों व मंडपों की इन्होंने मरम्मत करवायी तथा हंस, गरुड़ वाहनों का स्वर्ण लेपन करवाया था। इनके कार्यकाल में ही यात्रियों के लिए एक धर्मशाला व चिकित्सालय बनवाये गये।

भगवान बालाजी के द्वार रक्षकों की मूर्तियों के साथ सटी हुई दीवारों पर रजत कशीदाकारियाँ बनवायीं। छोटी-सी माता पद्मावतीजी की मूर्ति बनवाकर भगवान बालाजी की छाती पर स्थायी रूप से प्रतिस्थापित करवायी थी। यह एक महत्वपूर्ण विषय था।

तिरुपति में स्थित भगवान श्री गोविंदराजस्वामीजी की मूलविराट प्रतिमा को तथा उनकी पटरानियों को इन्होंने ही रजत आभरण बनवाये थे। उत्सवमूर्ति के लिए वज्रपथक, चूडिक्कोडुत्तनाच्चियार (गोदांबा माता) को रत्न जड़ित कमरबंध एवं स्वर्ण हार इनके द्वारा ही बनवाये थे। दो-दो बार मन्दिर गर्भ में इन्होंने 'जटा बंधन' सेवा करवायी तथा आलय-मुखमण्ड़प, कल्याण मण्ड़प से 'पडिकावलि गोपुर' तक स्थित मार्ग में मूल्यवान पत्थर बिछवाये थे। प्रयागदासजी ने ही मन्दिर के गर्भगृह को नये सिरे से विमान निर्माण करवाकर वहाँ स्वर्ण-लेपित कलश रखवाया।

श्री गोविन्दराजस्वामीजी मन्दिर के पीछे देवस्थान के कार्यालय भवन को निर्मित करवाकर उसमें एक सुदृढ़ कोशागार भी इन्होंने बनाया था।

श्री प्रयागदासजी से ही करवाये गये अन्य महत्वपूर्ण मन्दिर सम्बन्धी कार्य-

१. तिरुपति श्री कोदण्डरामस्वामी मन्दिर की मूलविराट मूर्तियों में से श्रीरामचन्द्र की मूर्ति के रजतकवच की मरम्मत एवं सीता-लक्ष्मण मूर्तियों के लिए नये रजत कवचों की व्यवस्था।

२. यहाँ स्थित अन्य मूर्तियों के कर-चरणों को भी कवचों की व्यवस्था।

३. उत्सवमूर्तियों के लिये कुछ आभूषण एवं सारे मन्दिर परिसर में कीमती पत्थर बिछाये गये।

४. तिरुचानूर माताजी के मन्दिर गर्भगृह पर विमान निर्माण एवं उस पर स्वर्ण लेपित कलश की स्थापना।

५. भगवती के लिए स्वर्ण मुकुट, रजत पहनाव, सुंदरराज स्वामी के लिए स्वर्ण मुकुट, हाथों के लिये रजत पहनाव (आभूषण), वज्रजड़ित कर्णपत्रों की व्यवस्था।

६. मन्दिर की दक्षिणदिशा में यात्रियों के लिए एक धर्मशाला निर्माण।

७. सारे मन्दिर परिसर में पत्थरों को बिछवाया।

८. प्लवोत्सव (नौका विहार) की समुचित व्यवस्था।

९. कपिलतीर्थ में पर्वत से सटे हुए भगवान श्री कपिलेश्वर स्वामी की प्रतिस्थापना एवं कुंभाभिषेक की व्यवस्था।

१०. पार्वती-शंकर की उत्सवमूर्तियों के लिए किरीट, हस्त-आभरण, चरण-आभरण, कुछ आभूषण एवं नंदिवाहन के लिए रजत आभरण की व्यवस्था।

११. प्लवोत्सव (नौका विहार)।

१२. तिरुपति रेल्वेस्टेशन के निकट यात्रियों के लिए प्रथम धर्मशाला।

१३. मुम्बई की एक वृद्धि निधि में देवस्थान की रु.५,००,०००/- राशि को जमा किया गया। जिससे सालाना रु.५४,५००/- का ब्याज मिलता था।

१४. रु.१४,०००/- की राशि खर्च करके चेन्नै से एक 'वेणी' खरीदी गयी जिसमें 'नवरत्न' जड़ी थी।

उत्सवों के दौरान इसे तिरुपति लाकर भगवान श्री गोविंदराजस्वामी की पटरानीजी को भी सजाते थे।

१९३० ई. में गद्वाल रियासत की एक रानी द्वारा प्राप्त स्वर्ण से प्रयागदासजी ने कुछ आभूषण बनवाकर मलयप्पा भगवान के लिए एक सुंदर मुकुट बनवाया था।

प्रयागदासजी के कार्यकाल में एक और महान व अद्भुत कार्य किया गया था। मन्दिर की दीवारों पर लिखे गये शिलालेखों को अनुशीलन करने के प्रस्ताव को इन्होंने अनुमोदित किया एवं साधु सुब्रह्मण्य शास्त्रीजी को शोधकर्ता के रूप में नियुक्त किया और उसे हर प्रकार का सहयोग दिया था। १९२१ ई. में यह कदम उठाया गया था। १९२१ ई. में ही तत्कालीन सरकारी शिलालेख शोधकर्त्ता (एफीग्रफिस्ट) एच. कृष्णशास्त्री एक बार भगवान के दर्शनार्थ आये। तब उन्होंने दीवारों पर स्थित अनेक शिलालेख देखकर उन्हें उनका फोटो-खींचकर अनुशीलन करने का सुझाव दिया था। इस प्रस्ताव को महन्त प्रयागदासजी ने अपनी-अनुमति दे दी। श्री शास्त्री का कहना था कि इससे मन्दिर के समग्र इतिहास की जानकारी होगी। बाद में साधु सुब्रह्मण्य शास्त्री को इसके लिए चुना गया एवं उसे मद्रास में (चेन्नै) प्रशिक्षण दिलवाये, मन्दिर के दीवान पेशकार दोरस्वामैय्या की अहम भूमिका थी। कर्मचारियों का सहयोग भी साधु सुब्रह्मण्य शास्त्रीजी को प्राप्त हुआ।

मद्रास (चेन्नै) में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् श्री शास्त्रीजी ने सन् १९२२ से प्राचीनतम शिलालेख जमा करना प्रारंभ किया एवं यह कार्य १९२७ तक किया गया। शास्त्रीजी ने तिरुपति में भी यह कार्य किया था। इस प्रकार प्राप्त शिलालेखों की कुलसंख्या १०६० थी। ये सभी बहुमूल्य थे। प्रातःस्मरणीय प्रयागदासजी की देखरेख में ही यह कार्य सम्पन्न हुआ एवं इन पर एक महत्वपूर्ण प्रतिवेदन भी तैयार किया गया था जो काफी महत्वपूर्ण था। तभी मन्दिर का इतिहास प्रकाश में आया। इन शिलालेखों पर शोध कार्य भी प्रारंभ हुआ। श्रद्धेय महन्त प्रयागदासजी के द्वारा किये गये अन्य सभी कार्यों की तुलना में यह कार्य बड़ा महत्वपूर्ण था। इस कार्य के द्वारा वे अविस्मरणीय हुए। सन् १९३३ ई. तक महन्तों की बहुमूल्य सेवायें तिरुमल-तिरुपति एवं तिरुचानूर मन्दिरों को प्राप्त हुईं। तदुपरान्त देवस्थान बोर्ड अस्तित्व में आया एवं बालाजी श्री वेंकटेश भगवान के वैभव में चार चाँद लगने लगे। महन्तों की अतुलनीय सेवाओं से अनुप्राणित व प्रेरित होकर वर्तमान कार्यकारी समिति अपनी विशिष्ट सेवायें समर्पित कर रही है।

वेंकटेशाय विद्महे श्रीमन्नाथाय धीमहि
तन्नो श्रीनिवासः प्रचोदयात्।।

(समाप्त)

(गतांक से)

दिव्यक्षेत्र तिरुमल

तेलुगु मूल - श्री जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यम्

हिन्दी अनुवाद - श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण
मोबाइल - ८९२८९५२६२२

भृगु का तीन लोक-यान

नारदमहर्षि ने गंगा के तट पर लोक-मंगल के लिए यजन करते हुए ब्रह्मर्षियों में भारी खलबली मचा कर चला गया था। अब त्रिमूर्तियों का परीक्षण कौन करेगा और उनमें लोक-मंगल यज्ञ के लिए यजमानी के तौर पर किसे अर्हत सिद्ध करेगा?

इस बात को ले करके महर्षियों ने अपने में खूब तर्क-वितर्क किया। उनमें व्यापक संवाद जो चला। आखिरकार, सब लोगों ने मिलकर त्रिमूर्तियों के परीक्षण के लिए योग्य व्यक्ति ''भृगुमहर्षि'' को सिद्ध किया।

अब महर्षियों के आदेशानुसार, लोक-मंगल यजन के यजमानी स्थिर करने के लिए तीनों ऊर्ध्व लोकों का यान करते हुए भृगमहर्षि निकला।

१. पहले भृगु सत्यलोक पहुँचा, जिसके अधिनायक ब्रह्मदेव था और उसकी पटरानी विद्याओं की अधिनेत्री सरस्वती था। सत्यलोक में प्रकाश ही प्रकाश था। सब जगह सन्नाटा ही सन्नाटा था। सरस्वती सामवेद का गान करती थी। ब्रह्म के चारों मुखों से वेदों का पठन हो रहा था। दोनों दम्पती अलग-अलग सफेद कँवल के फूलों पर आसीन थे।

सत्यलोक में सब अपने-अपने काम में मगन थे। किसी ने भी उस लोक पधारे मुनिश्रेष्ठ भृगु की खातिरदारी की और किसी ने उसके आगमन पर श्रद्धा ली।

पहले भृगु ने ब्रह्म का अभिवादन किया और फिर सरस्वती देवी का। मगर दोनों में से किसी ने भी भृगु के अभिवादन का प्रत्यभिवादन नहीं किया। भृगु उस घनघोर

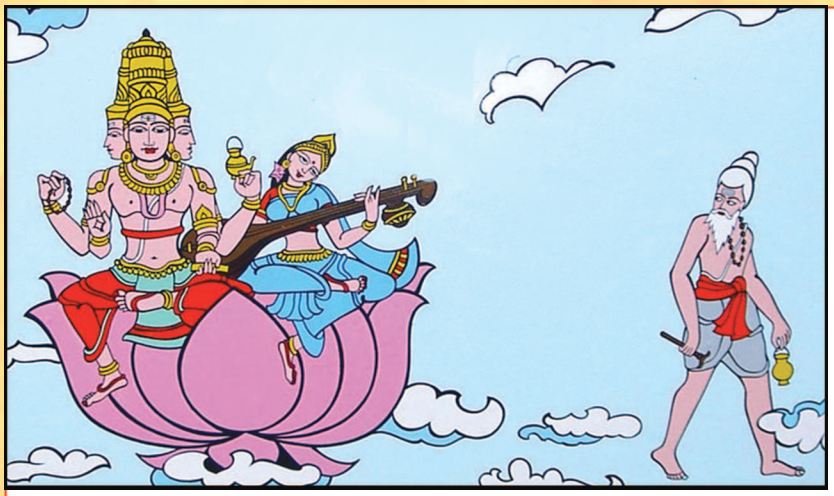

सन्नाटे में काफी समय तक खडा रह गया था - विनम्र भंगिमा में। मगर किसी ने उस पर ध्यान न दिया, तो बडे ही क्रोध में आकर ब्रह्म - दम्पतियों की शाप दिया, ''ऐ ब्रह्मदेव! तुम्हारा तो घमंड काफी हद तक बढा हुआ है, जिस कारण तुम लोगों की खातिरदारी ही न कर रहे हो। अतएव भूलोक में तेरा कोई विग्रह न होगा और न ही तुम्हारी पूजा ही होगी।''।

२. ब्रह्मदेव को ऐसा शाप देकर भृगु महर्षि कैलास में चला गया। कैलास में काफी कोलाहल मचा हुआ था। भृंगी, श्रृंगी, नंदी आदि शिवगण नाच-गान में मगन था। इस कोलाहल के बीचोंबीच महर्षि भृगु को बता दिया गया था कि अभी तो पार्वती और परमेश्वर का दर्शन नामुमकिन है, मेल-मिलाप दुर्भर है क्योंकि दोनों आदिदम्पती एकांत नाच-गान में खूब मगन है।

भृगुमहाशय इस अनादरण पर हताश होगया और क्रोध में आकर शाप दिया उन परमेश्वर कि भूलोक में उसके यथारूप या वास्तव रूप की

मूर्ति की पूजा न होगी। वरन् उसकी लिंग-मूर्ति की पूजा होगी, क्योंकि तुम हमेशा लिंग लेकर पार्वती से संभोग करते रहते है।

३. फिर भृगुमहर्षि चला गया वैकुंठ, जहाँ आदिशेष पर लेटे महाविष्णु अपनी पत्नी लक्ष्मीदेवी से प्रणय क्रिया कलाप में मगन था। महालक्ष्मी अपने पति के वक्षःस्थल पर लेटी हुयी थी और श्रीस्वामी के कान में किसी बात को लेकर फुसफुसा रही थी। भृगु काफी देर तक इन्तजार करता रहा ताकि वे दोनों दिव्य दंपती अपने एकांत से टूट कर अपनी खातिरदारी करें! मगर भृगु का सारा इन्तजार बेकार में गया। न महालक्ष्मी और न ही महाविष्णु ने अपने प्रणय क्रिया-कलाप से टूटे और भृगु की मर्यादा के लिए उद्युक्त हुए।

वैकुंठ में अनादरण पर भृगुमहाशय काफी चिंतित हुआ और असके क्रोध की कोई सीमा न रही। उसे इतना क्रोध आया कि उसने अपना दाहिना पैर उठाकर काफी बल जता कर महाविष्णु की छाती पर जोर की लात मारी। वह लात सरासर विष्णु देव के वक्षःस्थल पर लगी, जहाँ पर लक्ष्मीदेवी लेटी हुई अपने पीव से प्रेम के वचन बोलती थी। लात तो सरासर लक्ष्मीदेवी को ही लगी। वह देखी तो आगे परम क्रोधित भृगुमहर्षि दिखाई दिया। वह नाथ की तरफ देखती, तो श्रीमन्नारायण तो यथारीति शेषशायी हो योगनिद्रा में डूबा मस्तमौला दिखाई दिया।

और इस योगनारायण के कारण अपने को इस कुपित ऋषि से भारी भरकम लात खानी पडी, जो अभी तक अपने अनुभव में नहीं। इतना होवे हुए भी यह महानुभाव योगनारायण टस-से-मस न हुआ।

लात खायी लक्ष्मीदेवी को भृगु पर नहीं, बल्कि अपने चिर हृदयनाथ पर काफी गुस्सा आया। और, वह झट अपने हृदयनाथ के वक्षःस्थल से उठी, भृगु को अपने रास्ते से ढकेलते हुई वह वैकुंठस्थल छोड कर फुर्ति से चलती हुई भूलोक सिधर गयी और महाराष्ट्र राज्य के ''कोल्हापुर'' में जाकर आसीन हो गयी, जहाँ के लोग उसके महाभक्त थे और उसकी काफी पूजा आराधना करते थे।

महालक्ष्मी के उतर जाने के पश्चात् श्रीमन्महाविष्णु का होश हवाश में आया। उसकी बुद्धि ठिकाने पर बैठ गयी। उसने देखा की हृदयलक्ष्मी गायब है और यमराज की तरह आगे क्रोध के मारे हाँफते हुए भृगु महाशय दिखाई पडा। विष्णु भगवान को सारा वृत्तान्त याद हो आया। वह झट उठा और लात मारे भृगु का आलिंगन किया। आसन पर बिठाकर उचित मर्यादा का बर्त्ताव किया। लात मारे भृगु का दहिना पाँव अपने हाथ में लिया और उसमें हुए उसके ''ज्ञाननेत्र'' को अपनी अंगूठी से खरोच कर छिन्न-भिन्न कर दिया। इस तरह अपने पाँव में हुए ज्ञाननेत्र खो जाने पर भृगु का अहंकार चकनाचूर हो गया और उसका होश ठिकाने पर आ गया।

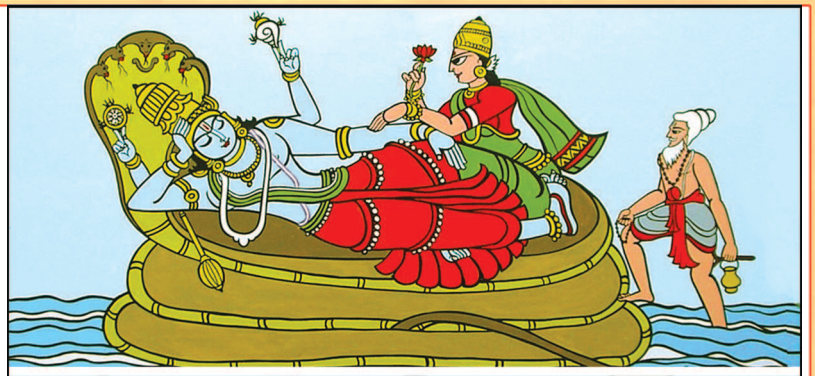

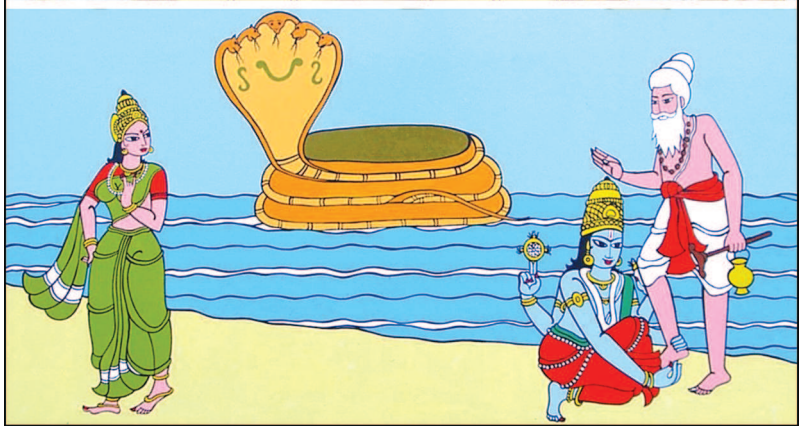

ज्ञाननेत्र खोकर अहंकार विवर्जित बनने पर भृगुमहर्षि परम शांत बन गया। उसने देखा अपने आगे लोकाधिनाथ श्रीमन्महाविष्णु बैठा हुआ है, जिसकी गोद में अपना दायाँ पाँव उपस्थित है, जिसे सहलाता था वैकुण्ठनाथ।

झट उठा भृगु और महाविष्णु की स्तुति की और उसकी महिमा को सराहा। भृगु वैकुण्ठ से बिदा लेकर सीधा भूलोक सिधारकर, पावन गंगानदी के किनारे पर होम करते हुए अत्रि, कण्व, भरद्वाजादि ऋषि-मुनियों को बताया कि इस लोकमंगल यज्ञ में हविस के भागस्वामी श्रीमन्महाविष्णु के अलावा और कोई नहीं हो सकता।

वैकुंठ से सीधा भूलोक के पावन गंगा-तट पर महर्षी भृगु पधारे, जहाँ अत्रि, भरद्वाजादि ऋषिगण ''कलिशांति'' नामक यज्ञ करने लगे थे। उस महायज्ञ के फल के भोक्ता के निर्णय-हेतु तीनों लोकों के पर्यटन में गये हुए भृगुमहर्षी ने उन ऋषि-मुनियों को सविस्तार बताया था कि इस महायज्ञ के फल भोक्ता वैकुंठ के अधिपति श्रीमन्महाविष्णु के अलावा और कोई नहीं हो सकता!! इस पर पूर्ण रूप से संतुष्ट

होकर उन ऋषियों ने महाविष्णु को अधिष्ठान बना कर यज्ञ का निर्वाहकर हविस का समर्पण किया।

भृगुमहर्षी के लक्ष्मीयुक्त वक्षःस्थल पर ताडन के दुष्परिणाम के फलस्वरूप श्रीमहाविष्णु को भूलोक सिधारना पडा और उसीका परिणाम था कि आज का तिरुमल धाम का निर्माण हो पाया।

वैकुंठ से भागी भाग्यलक्ष्मी

श्रियध्यासित अपने वक्ष पर जबर्दस्त लात मारने पर भी श्रीमन्महाविष्णु ने उस भृगु पर गुस्सा न किया। ना ही उसे कोई दंड दिया। ऊपर से उसके पैर को अपने गोद में लेकर सहला कर, उसका आदर कर बिदा करना लक्ष्मीभाई को कतई अच्छ न लगा। उसे ढ़ेर सारा गुस्सा आया। महाविष्णु ने उसको बडा समझाया बुझाया मगर क्रोधित लक्ष्मीदेवी का मन शांतन हो पाया। उसका मानसिक ताप ठंडन पडा, अतएव वह महावैकुंठ छोड कर भूलोक चली आगयी।

भूलोक से महालक्ष्मी सरासर पाताललोक चली आयी। वहाँ कपिलमहामुनि आश्रय बना कर तपस्या कर रहे थे। महालक्ष्मी कपिलजी के आश्रम में ठहर गयी। वहाँ वह मानसिक आनंद और शारीरिक सांत्वना के लिए प्रशांत ढंग से तपस्या करने में मगन रह गयी।

उन दिनों उस प्रांत में कोल्हासुर एवं करवीर नामके दो राक्षस होते थे, जिनकी अमानवीय क्रियाओं से लोग बहुत पीडित थे। देवताओं ने कपिल के आश्रम में तपस्या करती हुई लक्ष्मीदेवी से प्रार्थना की थी कि वह उन दुर्दान्त राक्षसों का संहार कर लोगों को चैन से जीने का मौका दे। लक्ष्मीदेवी उन असुरों के अमानवीय कृत्यों पर आग बबूला बन कर रणचंडी बन गयी और उन दोनों राक्षसों का घनघोर संग्राम में मार गिराया। लोगों ने लक्ष्मीदेवी का जयजयकार किया और ''कोल्हापुर क्षेत्र'' में अम्मा के आवास के लिए एक आलीशान मंदिर बनाया, जहाँ आज भी लक्ष्मीदेवी वास कर अशेष भक्तजनों से आरती लेती हुई वैभवपूर्ण ढंग से विराजमान है।

(क्रमशः)

तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

तेलुगु मूल - डॉ.आकेल्ल विभीषणशर्मा

हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.के.माधवी

मोबाइल - ६२८१८९४२०८

श्री महाविष्णु भूलोक में १०८ दिव्य तिरुपतियों में अर्चामूर्ति के रूप में विराजमान हो रहे हैं। उनमें स्वयं व्यक्त मूर्ति के रूप में श्रीरंगं, श्रीमुष्णं, तोताद्रि, सालग्राम, नैमिशं, बदरिकाश्रम, कंचि, वेंकटाचल नामक आठ क्षेत्रों में स्वयं व्यक्तमूर्ति के रूप में पूजाएँ स्वीकार कर रहे हैं। इन आठ क्षेत्रों में तिरुमल क्षेत्र उस स्वामी के प्रत्यक्ष महिमाओं के साक्षी के रूप में शोभित हो रहा है। उस पद्मनाभ तिरुमलस्वामी की देवेरि अलमेलुमंगा तिरुचानूर में विराजमान है।

इतना ही नहीं कलियुग दैव श्रीनिवासप्रभु तप किये गये पुण्य प्रदेश तिरुचानूर है। सूर्यनारायण को सामने रखकर अपने हृदयकमल पर निवसित संपदाओं की माँ के लिए, दीक्षा से १२ साल तपश्चर्या किया था। अगणित महिमाओं का निलय पद्मसरोवर में कार्तिकमास, शुक्लपक्ष, पंचमी तिथि, उत्तराषाढा नक्षत्र में शुक्रवार के दिन महालक्ष्मी ने स्वर्णकमल में पैदा हुई है।

इस क्षेत्र में हर साल वृश्चिक मास पंचमी के दिन अवबृथ का संकल्प करके, उस दिन के पहले नौवे दिन में ध्वजारोहण करते हैं। लघुशेषवाहन से शुरु होकर कई वाहनों पर श्री पद्मावती देवी ब्रह्मोत्सवों में तिरुवीथियों में जुलूस निकालते हुए कई सन्मंगल फलों को भक्तजनों को प्रसाद करती हैं।

ध्वजारोहण

अखिलांडकोटि ब्रह्मांड नायक श्री वेंकटेश्वर स्वामी की हृदयेश्वरी पद्मावतीदेवी को गजध्वजारोहण से ब्रह्मोत्सवों की शुरुआत होती है। 'ध्वज' मंदिर में जीवस्थान है। इस नवाह्निक ब्रह्मोत्सवों को सभी देवताओं को, परिषद देवताओं को, अन्य भक्तकोटि को आह्वान करना ही इस ध्वजारोहण का अंतरार्थ है।

लघुशेषवाहन

श्री पद्मावती देवी के ब्रह्मोत्सवों में पहला वाहन - ''लघुशेषवाहन'' है। शेष श्रीवैकुंठ में नित्यशूर होकर लक्ष्मीनारायणों की सेवा कर रहा है।

लघुशेषवाहन पर पद्मावती देवी जीवकोटि का उद्धार करनेवाले लोकमाता के रूप में दर्शन देती है। श्रीनिवास को शेषशेषि के रूप में अनुनित्य स्तेत्र करना भागवतों का कर्तव्य है। जीवकोटि का परिरक्षण करनेवाले स्वामी को जानने के लिए श्री पद्मावती देवी का अनुग्रह ही मूलकारण होता है।

महाशेषवाहन

श्री पद्मावती देवी को कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में दूसरा वाहन महाशेष है। आल्वारों के स्तुति के अनुसार ''एन्नाल् कुडइडुमा... सिंगासनमा'' लक्ष्मी सहित स्वामी को दास के रूप में, सखा के रूप में, शयन के रूप में, सिंहासन के रूप में, छत्र के रूप में, समयोचित रूप में सेवाएँ देता है। अभयवरदहस्त स्वामी की पट्टमहिषि अलमेलुमंगा का वाहन बनकर, अपने विशेष ज्ञानबलों से मिला दास्य भक्ति को दिखा रहा है।

परमपुरुष श्रीनिवास की हृदयेश्वरी पद्मावती ने ही कई अंशों से जीवों को घनता दे रही है। उस दिव्यतत्त्व को ही अगस्त्य महामुनि ने ऐसे प्रस्तुत किया है- ''हे माता! महालक्ष्मी! पुरुष में रहे भाग्य लक्षण ही आपका अंश है। स्त्री में रहे विलासलक्षण आपका अंश है। हाथियाँ, घोडे, साँप, पक्षी आदि में रहे विशिष्ट लक्षण आपका ही अंश है। पेड-पौधे, हरे भरे घास, पशु आदि में हरेक जीव में रहे असाधारण बनकर दिखाई देनेवाले सारे अंश तुम्हारी ही है।'' शेषवाहन पर पद्मावती देवी का दर्शन विषतुल्य मानवों के पापों को दूर कर देता है।

हंसवाहन

श्री पद्मावती देवी के वार्षिक ब्रह्मोत्सवों में दूसरा दिन रात के समय हंसवाहन पर वीणापाणी बनकर दर्शन देती है। हंस में दूध और पानी को दूर करने की शक्ति है। पानी को छोडकर दूध को ग्रहण करती है। सारी विद्याएँ पद्मावती देवी के अनुग्रह से प्राप्त होती है।

''वीण वायिंचेने अलमेलु मंगम्मा,
वेणुगान विलोलुडैन वेंकटेशुल योद्ध'' - ऐसे अन्नमय्या ने कीर्तन किया है।

अनुनित्य वेणुगान विलोल श्रीवेंकटेश्वर के पास कर्णामृत रूप से वीणा बजाने वाली अलमेलुमंगा हंसवाहन पर तिरुमाडावीथियों में जुलूस निकलती है। ताल्लपाक कवियों के संकीर्तनों में दिखाई पडे सकल विद्यासार अलमेलुमंगा अनुग्रह ही है। योगि मनोविहार श्री वेंकटेश्वर पर भक्ति को, शरणागति को समस्त बृंदों को प्रसादित करुणांतरंगा ही अलमेलुमंगा है।

मोतीवितानवाहन

संपदाओं की माँ तीसरे दिन सुबह मोतीवितान वाहन पर जुलूस निकलती है। सुंदर मोतियाँ पद्मावती देवी केलिए प्रीतिदायक है। पुराणों के द्वारा विदित

होता है कि- स्वाति कार्ते में वर्षा की बूँदे सागर के मोतियों की सीपियों में पडकर मोती के रूप में बदलती है। हाथियों के कुंभस्थल में मोतियाँ रहती है, ताम्रपर्णी नदी के तट में मिलते है। कल्पवृक्ष की छाल में भी मोतियाँ रहेगी। मोतियों को आभरणों के रूप में धारण करना, विवाह के समय अक्षत रूप में उपयोग करना सदाचार है।

सफेद, ठंडे मोतीपालकी पर जुलूस निकालने वाली अलमेलुमंगा की सेवा किये भक्त बृंदों का तापत्रय बदलकर कैवल्य फल के रूप में बदलती है। उस लोकमाता को सारे ब्रह्मादि देवताएँ श्री वेंकटेश्वर के कटाक्ष पाने की योग्यता को प्रदान करने केलिए प्रार्थना करेंगे।

सिंहवाहन

कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में पद्मावती माता तीसरे दिन रात सिंहवाहन पर दर्शन देती है। सिंह पराक्रम का, योग शक्ति का प्रतीक है। माता के सिंहवाहन के रूप में, मिलने के बाद, दुष्टशिक्षणा, शिष्ट रक्षणा, सुनायास ही कर देती है। भगवति पद्मावती ऐश्वर्य, वीर्य, यशस्यु (यश), श्री (प्रभा) ज्ञान, वैराग्य जैसे छः गुणों को भक्तजनों को प्रसाद करती है।

नित्यानपायिनी के रूप में, स्वामी के वक्षोविहारिणी के रूप में कीर्तित अलमेलुमंगा, सूरज में रोशनी, चाँद में चाँदनी, जल में शैत्यं, दाहहरण, पृथ्वी में सुवासना, विकसित करने की शक्ति ये सब पद्मावती देवी के ऐश्वर्यस्वरूप ही है। सृष्ट्यादि से, सृष्टिस्थित्यादि पंचकृत्य परायण पराशक्ति 'अलमेलुमंगा' इस क्षेत्र में पांचरात्र आगमहित से पूजाएँ ले रही मंगलदेवता है। सकल संपदाओं की अधिदेवता है। सिंहवाहन पर प्रसन्न रूप से दर्शन देने वाली पद्मावती देवी प्रसन्न जनों को परिरक्षित करने वाली धैर्य लक्ष्मी है।

कल्पवृक्षवाहन

कल्पवृक्ष पद्मावती देवी को ब्रह्मोत्सवों में चौथे दिन सुबह वाहन बन रही है। क्षीर सागर में अमृत के लिए मंथन करते समय लक्ष्मीदेवी के साथ पैदा हुई है। अलमेलुमंगा, चरण-कल्प तरु के सुनहले पत्ते को याद दिलाती है - अन्नमय्या ने ऐसे कीर्तित किया है।

तरुणि पादालु कल्पतरुवु चिगुरु बोले
परगग दन वेनुबल मंटानु।

लक्ष्मीदेवी पद्मावती देवी होकर कलियुगदेवता श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को श्रीवैकुंठ से पृथ्वी पर लायी है। अलमेलुमंगा के अनुग्रह से उत्साह, उल्लास, आनंद मिलता है।

कल्पवृक्षवाहन पर विहार करने वाली अलमेलुमंगा इच्छाओं को पूरा करने में समर्थ है। मोक्ष को, अपवर्ग को, प्रसादित श्रीनिवास की धर्मपत्नी इच्छाओं को पूरा करने कल्पवृक्षवाहन पर जुलूस निकलनेवाली अलमेलुमंगा आश्रित भक्तजनों को आर्थिक कष्टों को दूर करने की परिपूर्ण शक्ति है।

हनुमद्वाहन

कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में चौथे दिन के रात अलमेलुमंगा हनुमद्वाहन पर दर्शन देती है। अतुल मतिमंत हनुमंत, श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त, मारुति ने सागर लांघ कर, लंका नगर पहुँचकर, सीतादेवी को अशोकवन में दर्शन किया है। अकलंकित राममुद्रा को सीतादेवी को दिया है। श्रीराम ने भल्लुक वानर सेना के साथ लंका नगर पहुँचने का शीघ्र ही तुम्हारी रक्षा करने की, हित वाक्य

हनुमान ने सीता से कहा है। हनुमान ने भक्ति पूर्वक कहा कि - नहीं तो मैं अपने पीठ पर बिठाकर आपको श्रीराम के पास ले जाऊँगा। इससे सीता ने जवाब दी कि - ''वीर श्रीराम, रावण को हराकर मुझे ले जाना ही ठीक है।'' उसी सीता माता ने कलियुग में पद्मावती देवी का अवतार ली है। अर्चामूर्ति के रूप में तिरुचानूर में पूजाएँ ले रही है। अशोकवन में सीता देवी को पहचानकर श्रीराम से कहे महाभक्त हनुमान की इच्छा को पूरा करने के लिए ही 'अलमेलुमंगा ने ब्रह्मोत्सवों में श्रीराम के रूप में हनुमान को वाहन के रूप में संभावित की है।

इस हनुमान के वाहन पर रहे पद्मावती देवी का दर्शन भक्तजनों को कीर्ति, धैर्य, आरोग्य, अजाड्य को विशेष रूप से प्रसाद करती है।

पालकीवाहन

कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में पाँचवें दिन के सुबह अलमेलुमंगा पालकी वाहन में दर्शन देती है। माता जगन्मोहिनी, विश्वरूपिणी है। उस देवदेवि के विराट रूप के सौंदर्य को उद्दीप्त करने के लिए सूर्य तथा चंद्रमा के अमूल्य रत्न जडित सुवर्ण बिंबों को माँ की वेणी में अलंकार के उपकरणों की भांति सुसज्जित करते हैं। उस मंगल देवता के पास रहनेवाला तोता गाना गाता है।

युवा सखियाँ, जोर जोर से चल रही हैं पालकी में बैठी मंगम्मा के बाल तितर-बितर हुई। फूल टूट पड रही है। अन्नमाचार्य ने थोडा घबराया। सखियों से ठीक तरह से चलने केलिए कहा।

कुलुकक नडवरो कोम्मलाला
जल जल रालीनि जाजुलु मायम्मकु...

चांदनी की पुंज रूपी अलमेलुमंगा जिस पालकी में बैठी है, उस पालकी को सुंदर ललनाओं ने कैसे ढोया तथा मंदगति से कैसे चलीं, उसका अत्यंत सुंदर दृश्य अन्नमय्या ने अपने संकीर्तन में ऐसा प्रस्तुत किया।

सौंदर्यराशि अलमेलुमंगा को ''विभुत्यै नमः'' कहकर भक्तगण स्तुति करते हैं। अष्टसिद्धों को विभूति के रूप में धारण करने वाली ऐश्वर्य देवता अलमेलुमंगा को इस पालकीवाहन सेवा में दर्शन करने पर अष्टसिद्धि प्राप्त होती है।

गजवाहन

तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी को जिस प्रकार गरुडवाहन प्रशस्त है उसी प्रकार कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में उनकी देवेरी श्री पद्मावती देवी पाँचवे दिन के रात स्वर्ण गजवाहन पर जुलूस निकलती है। अलमेलुमंगा की वाहन सेवाओं में गजवाहन सेवा की अत्यंत प्रामुख्यता है। असंख्याक भक्तजन इस वाहन सेवा का दर्शन करके पुनीत हो जाते हैं। ऐरावत, क्षीरसागर में अमृत मंथन करते समय लक्ष्मीदेवी के साथ उद्भव हुआ है। 'गज' ऐश्वर्य सूचक है। इसीलिए 'आगजांतं ऐश्वर्यं' ऐसा आर्योक्ति है। वेदांतदेशिकों ने क्षीरसागर में उद्भव हुए संपदाओं की माँ को गजराजाओं ने भक्ति से अभिषिक्त किया जैसा श्रीस्तुति किया हैं। दिशाओं का भार आठ दिग्गज वहन कर रहे हैं। कलियुग में गजराज के कारण श्रीनिवास को, पद्मावती माता को पहली बार परिचय हुआ है।

''नीवे तप्प इतः परं बेरुग'' कहकर शरणागति पाये गए गजराज, मगर के हाथों से साक्षात् श्रीमन्नारायण के द्वारा रक्षित हुए भागवतोत्तम है। गजेंद्र ने आश्रय

लिये शराणागति मार्ग को हर जीव अश्रय करने का संदेश देने वाले वाहन सेवा ही गजवाहन सेवा है।

सर्वभूपालवाहन

छठे दिन सुबह पद्मावती देवी सर्वभूपालवाहन पर जुलूस निकलती है। श्री वेंकटेश्वर सकल लोकेश्वर है। उस श्रीहरि हृदय पीठ पर खडे होकर लोकों को कटाक्ष करनेवाली करुणांतरंगा अलमेलुमंगा है। इस वाहन सेवा का दर्शन करे, तो राज्यसुखप्राप्ति मिलती है।

गरुडवाहन

ब्रह्मोत्सवों में पद्मावतीदेवी छठे दिन के रात गरुडवाहन पर जुलूस निकलती है। गरुड नित्यसूरों में अग्रेसर है। श्रुति वाक्य में इस प्रकार कहा गया है - ''वेदात्मा विहगेश्वरः''। गरुड के दोनों पंछियाँ ज्ञान-वैराग्यों का चिह्न हैं। स्वामी को और पद्मावती देवी के लिए नित्य वाहन हैं गरुडाल्वार। गरुड सेवा को 'पेरियतिरुवडि' के रूप में मान रहे हैं। भक्ति का साकार स्वरूप गरुड देवेंद्र के वज्र के घातक को पंछी के एक टुकडे डाले गये बलशाली है। १०८ दिव्यदेशों में गरुडसेवा की अपनी विशिष्टता है।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी को, श्री पद्मावती देवी को गरुडाल्वार ने अनुनित्य दास बनकर, चाँदनी के रूप में, आसन के रूप में, वाहन के रूप में और कई रूपों में सेवा कर रहा है। इसलिए श्री पद्मावती देवी को किये जानेवाले गरुडसेवा भक्तजनों को दास्य भक्ति को प्रसादित करती है।

सूर्यप्रभावाहन

श्री पद्मावती देवी कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में सातवें दिन सूर्यप्रभावाहन में जुलूस निकालती है। प्रकृति का चैतन्य प्रदाता, लोक को आरोग्य प्रसादित करने वाला सहस्र किरण श्री सूर्यनारायण है। परमात्मा सूर्यमंडल में रहने का आदत है। इसलिए स्वामी के वक्षःस्थल में स्थित पद्मावती देवी को ''सूर्यप्रभा'' ब्रह्मोत्सवों में वाहन बनना समुचित रूप में है। सूर्यनारायण को साक्षी बनाकर तिरुचानूर में स्वामी ने तप करके कृतार्थ हुए हैं। तिरुचानूर में आज भी नित्य पूजाओं से भासित सूर्यदेवालय इसका साक्षीभूत बनकर आज भी प्रस्तुत है। सूर्यप्रभावाहन सेवा में पद्मावती देवी का दर्शन आरोग्य, ऐश्वर्य, सत्संतान, सुज्ञान आदि फलों को परिपूर्ण रूप से प्रसाद करती है।

चंद्रप्रभावाहन

श्री पद्मावती देवी को कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में सातवें दिन के रात चंद्रप्रभावाहन सेवा अत्यंत निर्विघ्न रूप से मनाये जाते हैं। उपनिषद सखियों के रूप में रहे लोकमाता को चंद्रप्रभावाहन समुचित है। अपने हँसी (खुशी) की चाँदनी में श्री वेंकटेश्वर स्वामी को आह्लाद दिलाने-वाली अलमेलुमंगा को चंद्र ठंडे, सफेद कांति प्रसारित करनेवाले अपनी प्रभा को, अलमेलुमंगा का वाहन के रूप में दिया है। अगस्त्य ने चंद्रमुखि को मनोहर रूप में प्रस्तुति करते हुए शरणागति किये हैं कि -

चंद्रमुनियंदु ज्योत्स्नवु चंद्रवदना!
प्रभवु वासरकरुनंदु बद्मनयन!
दाहशक्तिवि पूबोडि! दहनुनंदु
म्रोक्केदनु नीकु गल्याणमूर्ति! लक्ष्मी!

तुम चाँद में चाँदनी हो, सूर्य में प्रभु हो, अग्नि में दाहार्ति हो। कल्याणमूर्ति! लक्ष्मी माता! मैं तुम्हें प्रार्थना करता हूँ। चंद्रप्रभावाहन सेवा के कारण भक्तजनों को

आध्यात्मिक, अधिभौतिक, अधिदैविक जैसे तापत्रय दूर होकर जीवन सुखवंत हो जाता है।

रथोत्सव

ब्रह्मोत्सवों में आठवें दिन के सुबह श्री पद्मावती देवी रथोत्सव में जुलूस निकलती है। रथोत्सव में कई भक्तजन सेवन करके पुनीत होने का अवकाश मिला है। कठोपनिषद में कहा गया है कि- आत्मा रथिक, शरीर रथ, बुद्धि सारथि के रूप में, मन रस्सी के रूप में, इंद्रिय-घोडे होकर, विषय रूपी वीथियों में निकलता है। अलमेलुमंगा रथ पर ब्रह्मोत्सवों में जुलूस निकलते समय अन्नमय्या ने आत्मानात्म विवेक को स्फुरण करने वाली रथसेवा को कई संकीर्तनों में प्रस्तुत किया है।

अश्ववाहन

कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में पद्मावती देवी आठवें दिन के रात अश्ववाहन पर जुलूस निकालती है। अश्व जोर से दौडने वाला सुंदर जानवर है। इसीलिए उपनिषद इंद्रियों को घोडे के रूप में अभिवर्णित किया है। अलमेलुमंगा सभी इच्छाओं को पूरा करने में एक ही उपाय के रूप में सौभाग्य के रूप में राजस से अश्व पर दिखाई देती है।

पद्मावती श्रीनिवासों की पहली मुलाकात, प्रणय के समय, परिणय के समय 'अश्व' साक्षी बनकर रहा है। अलमेलुमंगा अश्ववाहन सौभाग्य को पानेवाले भक्तजनों के कलिदोषों को दूर करती है।

पंचमीतीर्थ महोत्सव

पांचरात्रागम संप्रदाय के अनुसार इस क्षेत्र में सभी अर्चन कियाओं का निर्वहण हो रहा है। पांचभौतिक विकारजन्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधादि विषयसुख भोगों से मानव को विमुख बनाकर परमात्मा की सेवा में पुनीत करनेवाला शास्त्र पांचरात्र शास्त्र है। ''पांचरात्रमेव पांचरात्रम्''! पाँच रातों में साक्षात् श्रीमन्नारायण लक्ष्मी, ब्रह्म, अनंत, गरुड, विष्वक्सेनों को उपदेश किये अर्चनाविधान है यह। ये पांचरात्र संहितों को १०८ के रूप में विध्वांस बताये गये हैं।

इस पर्वदिन के संदर्भ में अपनी पत्नी को तिरुमल से श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने तुलसि, कुंकुम, हल्दी, पीतांबर, पण्यारं आदि हाथियों पर रखकर जुलूस निकालते हुए तिरुचानूर में मंदिर के गौरवों के साथ सौंपते है। सुदर्शन स्वामी से अवबृथस्नान को ब्रह्मोत्सव के आयासपरिहारार्थ उत्सवमूर्ति के रूप में पद्मावती देवी पद्मसरोवर के तट पर पहुँचती हैं। कार्तिक पंचमी के दिन तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर स्वामी को पद्मावती देवी के चक्रस्नान समाप्त होने तक सेवाओं का निर्वहण नहीं करते हैं। दूध, दही, मधु, हल्दी, नारियल का पानी इन सबसे किये जानेवाले अभिषेक देखते हैं। हल्दी-कुंकुम हमेशा पाने के लिए पंचमीतीर्थ में आयी हुए स्त्रियाँ, हमेशा के लिए सिरि-संपदाओं को, आमुष्मिक प्राप्ति को पाने के लिए आये भागवत आँख भर पूर देखकर पुनीत हो रहे हैं। चक्रस्नान के बाद हजारों भक्तजन पद्मसरोवर स्नान से धन्य हो रहे हैं। पद्मसरोवर में पंचमीतीर्थ के समय स्नान करने का सौभाग्य करोड जन्मों का पुण्यफल है।

जगन्माता!
अलमेलुमंगा!!
पाहिमाम्!!!

इतिहास में 'तिरुचानूर' क्षेत्र

तेलुगु मूल - श्री आई.एल.एन.चंद्रशेखर राव

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.रजनी

मोबाइल - ९७०१२६१६२६

कलियुग प्रत्यक्ष दैव श्री वेंकटेश्वर स्वामी और उनकी पत्नी श्री पद्मावती देवी है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी अनाथ-रक्षक भक्तजन प्रिय के रूप में विख्यात हुए तो उनकी रानी श्री पद्मावती देवी सुमधुर वचन बोलनेवाली माँ, भक्तों के लिए कल्पवृक्ष करुणामयी और प्रेमस्वरूपिणी के रूप में प्रसिद्ध पाकर अनगिनित भक्तों का आराध्य देवी बन गयी। श्री पद्मावती माँ तिरुचानूर दिव्यक्षेत्र में आसीन हुई।

तिरुमल क्षेत्र जितना पावन है, तिरुचानूर भी उतना ही पावन वैभव को अपना लिया है। तिरुचानूर चित्तूर जिला में तिरुपति शहर के पाँच किलोमीटर के दूरी पर स्थित है।

पूर्व काल में श्री शुकमहर्षि इस प्राँत में निवास करने के कारण इस प्रांत को ''श्रीशुकनूर'' नामक नाम बना था। ''श्रीशुकनूर'' तमिल में ''तिरुच्चगनूर'' के नाम से पुकारा गया। बाद में व्यवहारिक भाषा में यह 'तिरुचानूर' बना था। तिरुचानूर क्षेत्र के कई नाम प्रचलित हैं। वे हैं 'अलिमेलुमंगापुरम', 'अलिमेलुमंगपट्नम' आदि।

तिरुमल क्षेत्र को जितना प्राचीन इतिहास है, तिरुचानूर के लिए भी उतना ही पुराना इतिहास से संपन्न है। इतिहास से मालुम होता है कि पूर्व काल में तिरुमल जाने केलिए ठीक तरह से वातायात की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं था, इसी कारण से तिरुमल ब्रह्मोत्सवों का आयोजन तिरुचानूर में ही मनाया गया। पूर्व काल में तिरुमल क्षेत्र में ध्वजारोहण का ही निर्वाह होता था। अन्य सभी वाहन सेवाओं का आयोजन तिरुचानूर में ही मनाया जाता था। इस के लिए इतिहास गवाई है। उत्तरोत्तर काल में श्रीरामानुजाचार्य ने सभी उत्सवों को तिरुमल में संपन्न करने का आयोजन किया था। इतना ही नहीं तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी की प्रतिरूप को तिरुचानूर मंदिर में रखकर पूजा का आयोजन करने के कारण तिरुमल को न जानेवाले भक्तों के लिए तिरुचानूर में ही दर्शन भाग्य प्राप्त कराया गया। इस बात का उल्लेख ई.पूर्व नौंवी शताब्दी के पहले तमिलशासनों में मौजूद है। स्वामीजी के लिए तिरुचानूर में ही मंदिर का निर्माण हुआ। इस मंदिर को ''तिरुविलन्कोयिल' और उस मंदिर में विराजमान हुए स्वामीजी को ''तिरुवेंकट पेरुमनडिगल्'' के नाम शिलालेखकों में उल्लेखित हैं।

तिरुचानूर में करीब पचास से भी ज्यादा शिलालेख प्राप्त हुए। इन सभी शिलालेखों में तिरुचानूर का इतिहास उल्लेखित है। इस प्रकार तिरुपति प्रांत में

तिरुचानूर आध्यात्मिक मत कार्यक्रमों के लिए मुख्य केन्द्र के रूप में विराजमान हुआ। ई.सन ८वी शताब्दी के प्रारंभ में ही तिरुचानूर प्रांत में वैष्णव शाखा के एक प्रधान केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। नौंवी शताब्दी के आरंभ से ही कई वैष्णव लोग आकर तिरुचानूर में निवास करने लगे।

तिरुमल को जाने के लिए कष्टतर होने के कारण वैष्णवों के साथ भक्त समूह इसीलिए तिरुमल से भी अधिक प्राधान्य तिरुचानूर को दिया। तिरुचानूर में श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का प्रतिरूप प्रतिष्ठित होने के कारण, यह मंदिर भक्तों को आकर्षित करते हुए, पूजाओं को प्राप्त कर रहा है। ई.स ९वी शताब्दी के अंत में ''तोंडमण्डलम'' प्रांत को चोलों ने अपने हस्तगत किया। तिरुपति, तिरुचानूर प्रांत तोंडमंडलम का ही हिस्सा बन गया। चोल शैवमत के अनुयायी थे। चोलों के प्रभाव के कारण तिरुचानूर में शैवमत का आगमन हुआ था।

चोलों ने तिरुचानूर के पश्चिम प्रांत (प्रस्तुत योगिमल्लवर) में शिवालय का निर्माण किया। वही आज के पराशरेश्वर स्वामीजी का मंदिर है। तोंडमंडलम में चोलों का शासन तेरहवी शताब्दी के बीच में समाप्त हुआ। प्रथम जटावर्मा सुन्दर पांड्य ने चोलराज्य के इस प्रांत को आक्रमण करने के कारण चोलों का शासन लुप्त होगया। उसके बाद कुछ समय तक यादव ने इस प्रांत में अपना सत्ता जमाया। इसी समय तिरुचानूर में श्रीकृष्णस्वामीजी के मंदिर का निर्माण हुआ। विजयनगर राज्य का स्थापन ई.स १३३६ में हुआ था। मगर कुछ ही समय में यह प्रांत विजयनगर राज्य के अधीन हो गया। उनके शासन में तिरुचानूर, तिरुमल के साथ देदीप्यमान से प्रकाशित होने लगा।

विजयनगर साम्राटों के शासन काल में ही श्री पद्मावती माता के मंदिर का मुखमंडप का निर्माण हुआ। बाद में अंग्रेजों के शासन में तिरुमल का जिम्मेदारी हथीरामजी मठ को सौंपा गया। हथीरामजी मठ ने १८४३ जूलाई १६ वीं तारीख को मंदिर के देखरेख की जिम्मेदारी को स्वीकार कर, १९३३ तक पालन किया। इसी समय में वे तिरुचानूर की उन्नति के लिए कोशिश की। तत्पश्चात तिरुमल तिरुपति देवस्थान के न्यास-मंडलियों ने मंदिर की उन्नति को जारी रखते हुए, मंदिर को सर्वांगसुन्दर से बनाया।

इतना ही नहीं पदकविता पितामह ताल्लपाक अन्नमाचार्य ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी को सेवा करके, स्तुती भी किया।

चोच्चिति तल्ली! नी मरुगु
सोंपुग नी करुणाकटाक्ष मे
ट्लब्बेदो नीकु नेडु पर
मेश्वरी! यो यलुमेलुमंगा... जैसा

प्रप्रथम श्री पद्मावती देवी के लिए शतक का रचना हुआ।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ऊपर अनेक कीर्तनों की रचना अन्नमय्या ने किया।

'अलरुलु कुरियग... नाडनदे
अनकुल गुलुकुल नलिमेलुमंगा...' जैसा,
'परमात्मुडैना हरिपट्टपुराणिवि नीवु
धरममु विचारिनितागु नीकु अम्मा...' जैसा,

पद्मावती अम्मा के बारे में इन कीर्तनों की रचना की है।

ईशानं जगतोस्य वेंकटपतेर्विष्णोः परांमप्रेयसीम्
तद्वक्षस्थल नित्यवासरसिकां, तत्क्षांति संवर्धिनीम्
पद्मालंकृत पाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियम्
वात्सल्यादि गुणोज्चलां भगवतीं वंदे जगन्मातरम्।

नवम्बर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - ८३२८६९०८२३

मेषराशि - वाद-विवाद वाली स्थिति से बचना चाहिए। वाणी को नियंत्रण में रखे। शत्रुओं से सावधान रहे। जीवन साथी के साथ मन-मुटाव के योग हैं। प्रेम प्यार में कमी पैदा होगी।

वृषभराशि - व्यापारिक कार्यों में उन्नति का योग है। कोई शुभ कार्य सम्पादन होंगे। काम कार्य में मन लगा रहेगा। तनाव एवं खर्च बढ़ेगा। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मिथुनराशि - स्वास्थ्य ठीक, धन-पद प्रतिष्ठा के योग। मानसिक चिन्ता से ग्रस्त रहेंगे। अपने वाणी को नियन्त्रण में रखें। मित्रों का सहयोग प्राप्त होंगे। माँ शक्ति के बीज मंत्र का जप करें।

कर्कराशि - स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मानसिक कष्ट चिन्ता रहेगा। पारिवारिक जनों से मधुरव्यवहार, पत्नी विवाद न करें।

सिंहराशि - अपनों का सहयोग मिलेगा। उत्सवों में जाने का अवसर मिलेगा। सामाजिक कार्यों का योग बनेगा। मान-अपमान से बचे रहे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

कन्याराशि - मित्रों का सहयोग मिलेगा, धर्म कार्यों एवं उत्सवों में शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा, सामाजिक कार्यों में मन लगेगा।

तुलाराशि - चलते कार्यों में रुकावट बनेगी। कारोबारी क्षेत्रों में मन्द स्थिति बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में अडचने आयेगी। व्यर्थ की भागदौड़ में समय व्यतीत होगा।

वृश्चिकराशि - आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव के योग हैं। घरेलू-जीवन, मन्दा चलेगा। भाई-बाहनों में मतभेद होने की संभावनाएँ हो सकती है।

धनुराशि - मासारम्भ में आपका व्यापार कुछ गति पकड़ पायेगा। यात्रा के अवसर मिलेंगे। अपनी बात को स्पष्ट रूप से कहने का ही प्रयास रखें।

मकरराशि - कारोबार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। सन्तान पक्ष कमजोर रहेगा। काम में मन लगेगा। मनोबल बढ़ेगा।

कुम्भराशि - मासारम्भ में यात्रा के योग, विदेश गमन में हानि के योग, मास मध्य सामान्य रहेगा। मासान्त अच्छा है।

मीनराशि - मानसिक कष्ट चिन्ता रहेगा। किसी अनजान व्यक्तियों से सम्बन्ध न बनायें कष्टप्रद हो सकता है। आकस्मिक आपत्ति अथवा खर्च के योग बन रहे हैं। पुलिस-कोर्ट-कचहरी के चक्कर में न पड़े भुगतना पड सकता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : .....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
.....
पिनकोड .....
मोबाइल नं .....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नडा
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. पेय रकम :

६. पेय रकम का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाला का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नही है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाएँ और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

भक्तों की सेवा में...

श्रीपति के वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर दि. ३०.०९.२०१९ को ''श्रीनिवास वेद विद्ववत् सभा'' को ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने इस सभा का उद्घाटन कर भाषण दिया। इनके साथ श्रीवेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति आचार्य के.ई.देवनाथन्, ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, एस.वी.उन्नत वेदाध्यायन संस्था के विशेषाधिकारी डॉ.आकेल्ल विभीषण शर्मा ने भाग लिया।

ति.ति.दे. से आयोजित महाप्रदर्शन शाला का दि. ३०.०९.२०१९ के दिन ति.ति.दे.न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी ने संदर्शन किया। इनके साथ न्यासमंडली के सदस्य श्री डी.पी.अनंत, उद्यान विभाग के अधिकारी डॉ.श्रीनिवास आदि ने भाग लिया।

श्रीहरि के वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ग्यालरी में ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी ने अन्नप्रसाद का वितरण किया।

श्रीहरि के वार्षिक ब्रह्मोत्सव में पधारे भक्तजनों से देवस्थान के द्वारा प्रदत्त सुविधाओं के बारे में न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी ने जानकारी ली। साथ में ति.ति.दे. न्यासमंडली के सदस्य श्री मेडा मल्लिकार्जुन रेड्डी उपस्थित थे।

दि. ०१.१०.२०१९ को श्रीपति के वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे.ग्रंथों का विमोचन करते हुए ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., ति.ति.दे. ग्रन्थ प्रकाशन विभाग के विशेषाधिकारी डॉ.टी.आंजनेयुलु और अन्य कर्मचारी।

दि. ०२.१०.२०१९ को तिरुमल में नूतन निर्मित ''मातृ श्री वकुला देवी विश्रांति गृह'' को ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी ने प्रारंभ किया। इसमें ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री बसंत् कुमार, आई.ए.एस., मुख्य इंजीनियर श्री रामचंद्र रेड्डी, पी.आर.ओ. श्री टी.रवि आदि ने भाग लिया।

श्रीहरि के वार्षिक ब्रह्मोत्सव के संदर्भ में... दि. ०७.१०.२०१९ को अश्ववाहन सेवा में... ति.ति.दे.न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिल कुमार सिंघाल, आई.ए.एस., ति.ति.दे.न्यासमंडली के सदस्य श्री डी.पी.अनंत, ति.ति.दे. के प्रधानार्चक श्री वेणुगोपालदीक्षित आदि ने भी भाग लिया।

ति.ति.दे. श्री वेंकटेश्वर भक्ति चानल के समीक्षा समावेश में ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी ने भाषण दिया। इसमें तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री बसंत् कुमार, आई.ए.एस., एस.वी.बी.सी. के अध्यक्ष व संचालक श्री बालिरेड्डी पृथ्वीराज और एस.वी.बी.सी. सी.इ.ओ. श्री वेंकट नगेश उपस्थित थे।

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Dr.K.Radha Ramana, M.A., M.Phil, Ph.D.,** Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri R.V.Vijaykumar,** B.A., B.Ed., **Dy.E.O.,** (Publications & Press), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की

नूतन न्यासमंडली

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की नूतन न्यासमंडली को आंध्रप्रदेश राज्य सरकार ने नियुक्त किया। अध्यक्ष, सदस्य, पदेन सदस्य, विशेष आमंत्रितों से तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकरी, अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकरी, संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकरी, उच्चपदाधिकारियों ने शपथ करवाई। इन्हें श्रीपति के तीर्थप्रसाद दिया गया। वेदपंडितों ने आशीर्वचन दिया।

श्री सी.वेंकट प्रसाद कुमार
सदस्य

श्री एम.एस.शिवशंकरन्
सदस्य

श्री संपत रविनारायणन
सदस्य

श्रीमती सुधानारायण मूर्ति
सदस्य

श्री आर.कुमरगुरु
सदस्य

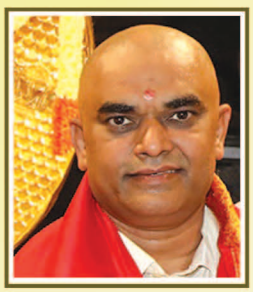

श्री पुट्टा प्रताप रेड्डी
सदस्य

श्री के.शिवकुमार
सदस्य

डॉ.मन्मोहन सिंह, आई.ए.एस.,
आं.प्र. के विशेष मुख्य सचिव,
रेवेन्यु व एंडोमेंट्स, पदेन सदस्य

डॉ.एम.पद्मा, आई.ए.एस.,
आं.प्र. धर्मस्व शाखा के आयुक्त,
पदेन सदस्य

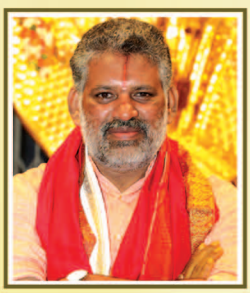

डॉ.सी.भास्कार रेड्डी
तुडा अध्यक्ष, पदेन सदस्य

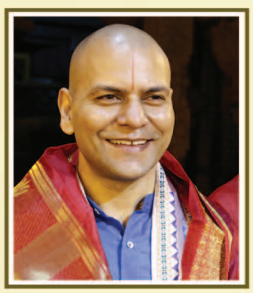

श्री अनिल कुमार सिंघाल, आई.ए.एस.,
ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी, पदेन सदस्य

श्री बी.करुणाकर रेड्डी
विशेष आमंत्रित

श्री राकेश सिन्हा
विशेष आमंत्रित

श्री ए.जे.शेखर
विशेष आमंत्रित

श्री कुपेंद्र रेड्डी
विशेष आमंत्रित

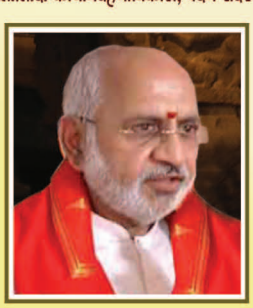

श्री गोविंदहरि
विशेष आमंत्रित

श्री दुष्मंत कुमार दास
विशेष आमंत्रित

श्री अमोल काले
विशेष आमंत्रित

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printed on 25-10-2019. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

01-12-2019 रविवार
दिन - चक्रस्नान, पंचमीतीर्थ